तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:55, Issue: 11,
April - 2025, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

अप्रैल-2025
रु.20/-

तिरुमल, श्री वेंकटेश्वरस्वामी का वसंतोत्सव

दि.10-04-2025 से दि.12-04-2025 तक

दि. 18-02-2025 से दि. 26-02-2025 तक श्रीनिवासमंगापुरम्, श्री कल्याणवेंकटेश्वर स्वामी का ब्रह्मोत्सव अत्यंत सुंदर रूप ढंग से संपन्न किया। इस संदर्भ में स्वामीजी देवेरियों सहित विविध वाहनों पर आरूढ़ होकर भक्तों को आशीर्वाद दिया।

दि. 19-02-2025 से दि. 28-02-2025 तक तिरुपति, श्री कपिलेश्वर स्वामी का ब्रह्मोत्सव अत्यंत वैभव से संपन्न किया। इस अवसर पर भगवानजी, देवी माँ के साथ विविध वाहनों पर आरूढ़ होकर भक्तों को दर्शन दिया।

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि॥
(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-२५)

यह आत्मा अव्यक्त है, यह आत्मा अचिन्त्य है और यह आत्मा विकार रहित कहा जाता है। इससे हे अर्जुन! इस आत्मा उपर्युक्त प्रकार से जानकर तू शोक करने के योग्य नहीं है। अर्थात तुझे शोक करना उचित नहीं है।

येट्टि वारिकि नेल्ल निट्टि कर्ममुलु मा
येट्टि वारिकि निंक नेदि तोवय्या ॥येट्टि॥

पामु जंपिनयट्टि पातकमुन पेद्द
पामुमीद नीकु बवलिंचवलसे
कोमलि जंपिन कोरत वल्ल
कोमलि नेदबेट्टुकोनि युंडवलसे ॥येट्टि॥

बंडि विरिचिनट्टि पातकमुन पेद्द
बंडि बोयिडवै पतिसेयवलसे
कोंडवेदिकिनट्टि गुणमुन तिरुमल
कोंडमीद नीकु गूचुंडवलसे ॥येट्टि॥

'व्याजस्तुति' वर्णित है।

'हे स्वामी! जैसी करनी-वैसी भरनी' का सूत्र आपके जीवन में भी सत्य निकला है। फिर हम जैसे साधारण जीवों का क्या कहना?

हे स्वामी! यमुना नदी में जो सर्पराज था, उसका घमंड चकनाचूर कर, उसका संहार करने के कारण, आपको शेषनाग पर ही सदा आसीन होना पड रहा है। पूतना का संहार करने का फल आपको यह निकला कि एक स्त्री (लक्ष्मी देवी) को जीवन-भर वक्षःस्थल पर धरना पडा। बचपन में शकटासुर को दो टुकडे करना आपको भारी पडा। अर्जुन के वाहन का सारथ्य इसी का फल है न? गोवर्धन पर्वत को उखाड, ऊँगली पर खडा करने का फल है, आपका तिरुमल पर यह निवास।

इन सभी वक्ताव्यों का अंतस्सूत्र है - वेंकटाधीश की प्रशंसा करना।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास

"मानव सेवा ही माधव सेवा है" - इसी लक्ष्य के साथ, ति.ति.दे. विविध हितकर कार्यों का निर्वहण समाज के लिए कर रही है। इस क्रम में ति.ति.दे. ने १९४३ वर्ष में अनाथ बाल बच्चों के संरक्षणार्थ 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर (तिरुपति) न्यास' की स्थापना की। आजकल 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर न्यास', श्री वेंकटेश्वर जलनिधि योजना, कल्याणमस्तु न्यास, श्री वेंकटेश्वर समाचार सांकेतिक न्यास आदि को अपने में मिलाकर 'श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास' के रूप में परिणत हुआ है।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लक्ष्य

01) अनाथ बाल बालिकाओं, वृद्ध, निराश्रित, अभागे, निर्धन एवं निर्बलवर्ग के व्यक्तियों की अभिवृद्धि, रक्षा, उनके कुशल क्षेम के लिए धर्मशालाओं एवं आवास प्रदत्त करना। अनाथ एवं निर्धन विद्यार्थी-विद्यार्थियों को आर्थिक रूप से सशक्त करना।

02) दिव्यांगों एवं मनोरोगियों के लिए आवश्यक चिकित्सा की सुविधाओं की व्यवस्था करना एवं उनके जीवन शैली को सुधारना। इस प्रक्रिया में किसी वर्ग एवं वर्ण भेद को त्यागकर सभी लोगों को एक ही स्तर में स्वीकार करना।

03) बाढ़, अकाल जैसी प्रकृतिक विपत्ति के संभवित समय में, अग्निफैलान जैसी अवांछनीय विपत्ति के उठने पर, तक्षण उनकी सहायता के लिए तैयार रहना।

04) जो बच्चे बहरे या मूक होते हैं, उनकी उन्नति के लिए पुनर्वास केन्द्रों की व्यवस्था करना।

05) उपर्युक्त लोप से त्रस्त ग्रामीण बाल बच्चों के लिए आवश्यक उपकरणों का वितरण करने के साथ-साथ उनको शिक्षा प्रदान करना।

06) समाज में पीने के पानी, जो अत्यधिक आवश्यक पेय पदार्थ है, उसको उपलब्ध कराना, तिरुमल पंचायती तथा तिरुपति नगर पालिका के लिए आवश्यक जल संसाधन की पूर्ति के लिए पुल एवं तालाबों का निर्माण करना। पानी के मितव्यय के लिए आवश्यक कार्यवाही करना।

07) पाठ्य पुस्तकों के साथ, इंटरनेट (अंतर्जाल) जैसी आधुनिक, सांकेतिक सुविधाओं को उपलब्ध कराकर, उसके द्वारा हमारे देश का इतिहास, सांस्कृतिक दाय प्राप्त संपदा को भावी पीढियों तक पहुँचाना।

08) समाज में शिष्टाचार तथा नैतिक मूल्यों के विकास के लिए युवा पीढ़ी में आत्मविश्वास को बढाना।

09) विवाह संपन्न कराने के द्वारा हितैषी के रूप में वधू-वर को आत्मविश्वास तथा गौरव के साथ जीवनयापन करने के लिए योग्य बनाना।

10) जो व्यक्ति उपर्युक्त कार्यक्रमों में कार्यरत हैं, उन व्यक्तियों तथा संस्थाओं की मदद करना। जो भी कार्य चालू हैं उनको बिना किसी लाभ की अपेक्षा किये, लक्ष्यसिद्धि को प्राप्त करना।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लिए इस रूप में चंदा भेजिए...

01) इस योजना के लिए कम से कम रु.१,०००/- भेजें।

02) अगर, चंदा रु.१०००/- से कम हो, तब उसे श्रीवारि हुण्डी के खाते में जमा किया जाता है और चंदादार को इसके बारे में कोई सूचना नहीं दी जाती है। सभी चंदादारों की चंदा किसी राष्ट्रीय बैंक में जमा की जाती हैं और उस पर जो सूद मिलता है, उसे उक्त योजनाओं के लिए खर्च किये जाते हैं। आप, अपनी चंदा को किसी राष्ट्रीय बैंक से, चेक या डिमांड ड्राफ्ट के द्वारा 'श्री कार्यनिर्वहणाधिकारी, श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम पर लेकर, 'प्रधान गणांकाधिकारी (चीफ़ अकौण्ट्स आफ़ीसर), ति.ति.दे., तिरुपति - ५१७ ५०७' के नाम पर भेज सकते हैं।

अन्य विवरण के लिए दूरभाष - ०८७७-२२६४२५८ को संपर्क करें।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-55 अप्रैल-2025 अंक-11

विषयसूची

श्रीराम नवमी	डॉ.जी.मोहन नायुडु	07
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	10
परशुराम जंयती	डॉ.एस.हरि	14
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	16
अक्षय तृतीया	श्री सी.सुधाकर रेड्डी	19
रामकथा सुंदर करतारी	डॉ.विजयप्रकाश त्रिपाठी	23
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	26
महाकुंभमोला में ति.ति.दे. का नमूना मंदिर		27
वकुला माता	डॉ.के.एम.भवानी	31
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	33
ऋषि दुर्वासा	डॉ.जी.सुजाता	37
''वैदिक गणित में घन''	डॉ.वड्डी जगदीश	41
चुकन्दर	डॉ.सुमा जोषि	43
आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!!	श्री अवधेष कुमार शर्मा	46
अप्रैल महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - दोनों हाथ उलीचिये	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - सकल सद्गुण संपन्न श्रीराम	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 33		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - उभयदेवेरियों सहित श्री मलयप्पस्वामी, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री सीता, लक्ष्मण सहित श्री पट्टाभिरामस्वामी, वायल्पाडु।

गौरव संपादक
श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण,
M.A., M.Phil., Ph.D.,
P.G. Dip. in Epigraphy, Dip. in Yoga

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

श्रीरामरक्षा सर्वजगद्रक्षा!!

यदि व्यक्ति आदर्श है तो परिवार भी आदर्श बन जाता है। श्रीराम से परे कोई उदाहरण नहीं है कि व्यक्ति कितना आदर्श होना चाहिए। हम इस आधुनिक युग में रामायण का पाठ कर रहे हैं, लेकिन हम इसके अर्थ को ठीक से नहीं समझ पा रहे हैं। हम रामायण महाकाव्य के माध्यम से जानते हैं कि केवल एक ही पत्नी है, एकमात्र तीर, एक ही बात... ये सभी प्रभु श्रीराम का नियम है। और इस के साथ-साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार, प्रतिज्ञा पालन, राक्षस संहरण, औदार्य की भाव, सीतादेवी का पातिव्रत्य धर्म, सहनशीलता, आदर्श पूर्वक धर्म नियम, पुत्रवात्सल्य, भरत आदि का सोदराभिमान, लक्ष्मण की सेवा भाव, राम कार्य में निमग्न हुए हनुमंत का स्वामी भक्ति, समय का नियम, ब्रह्मचर्यव्रत, अभय प्रधाता... ये सभी रामायण महाकाव्य का पवित्रता व प्रचार का दोहद बन गया है।

उनमें से एक के रूप में, उन में एक, उनकी जैसा कठिनाइयों को संबालने के कारण के वजह से राम सब के प्रिय व्यक्ति है। कामातुरागत वाली को मृत्यदंड देना ही सही सामाधान मान कर श्रीरामचन्द्र मूर्ति ने उनको संहरण किया। उसने सनातनधर्म को त्यागकर और अपने छोटे भाई सुग्रीव की पत्नी से विवाह करके पाप किया। वह कामवासना से यह पाप कार्य किया। इसलिए श्रीराम ने वाली को संहरण किया। सीतम्मा का अपहरण करने वाले रावणासुर को भी मृत्युदंड दिया।

कैका की इच्छा के अनुसार, पितृवाक्य के शासन के लिए, श्रीराम जंगलों में चले गए और मातृदेवोभव और पितृदेवोभव जैसे सनातन वाक्यों के भाष्य के रूप में श्रीराम ने खड़े हो गए। सहधर्मचारिणी जानकी को छोड़कर उनका ध्यान किसी अन्य स्त्री पर नहीं गया। यद्यपि विभीषण शत्रु थे, फिर भी जब वे शरण मांगने आये तो उन्होंने उन्हें आश्रय दिया। अयोध्या के राम, सकलगुण संपन्न, एक पत्निव्रत, शरणागत रक्षक, कर्त्तव्य का पालन के कारण धृढव्रत के नाम से जाने जाते थे।

राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न को इस बात के उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है कि भाइयों को एक-दूसरे के साथ कैसा रहना चाहिए और कैसे व्यवहार नहीं होना चाहिए। वे कैसा व्यवहार करेंगे, इससे अच्छे परिणाम मिलेंगे ये सब रामायण महाकाव्य के द्वारा वाली-सुग्रीव और रावण-कुम्भकर्ण को सामने रखकर हमें नित्य जागृत करता है।

भगवान राम, धार्मिक शक्ति और जीवन मुक्ति के लिए सबसे आसान तरीका दिखाते हैं। जानबूझकर गलत किया गया तो गलत नहीं है। जिन लोगों ने प्रायश्चित में दंड का अनुभव किया है, जिस का कोई दोष का त्रुटि नहीं होते है। पत्थर को स्पर्श करके अहल्या को शाप मोचन किया पतितपावन भगवान श्रीराम। निर्मल प्रेम से शबरी ने दी गयी फल को खाकर, अंतरों को न जान कर, सच्चाई प्रेम को पहचाने वाले प्रेममूर्ति प्रभु श्रीराम।

जटायु, शबरी, विभीषण, सुग्रीव, वानर सेना, काकासुर, पशु-पक्ष, जानवर ऐसा सभी जीवि से हितकारक के रूप में व्यवहार कर ''सर्वभूतेषु हितः'' जैसा सार्थकनामदेय कारक सीताराम है। वाग्दान देकर वाली को संहार करके, सुग्रीव को राज्य सौंप कर, जो पत्नी को फिर से जोड़ दिया कर सत्यवाक् पालक के रूप में खड़े हुए है। यदि प्रत्येक मनुष्य भगवान राम को न केवल भगवान मान सके, बल्कि उन्हें अपना आदर्श मानकर शाश्वत जीवन में भी जी सके तो यह दुनिया ही अयोध्या होगी। प्रत्येक व्यक्ति भगवत् स्वरूप है।

।। श्रीरामरक्षा सर्वजगद्रक्षा ।।

श्रीराम नवमी

- डॉ.जी.मोहन नायुडु

भारत में वर्ष-पर्यन्त ऋतु परिवर्तन के साथ-साथ जनसाधारण के द्वारा सामूहिक रूप से विविध प्रकार के त्योहार एवं उत्सव मनाये जाते हैं। जनता में समिष्टिगत एकता की भावना एवं सांस्कृतिक जागरूकता बनाने में इन त्योहारों का बडा महत्व है। इन त्योहारों में श्रीराम नवमी भी एक प्रसिद्ध हिंदू त्योहार है, जो हिंदू धर्म में सबसे अधिक लोकप्रिय देवताओं में से एक श्रीरामचंद्र के जन्म के अवसर पर मनाया जाता है। शुद्ध आचरण, शील और सदाचार के कारण हिंदू धर्म श्रीराम को आदर्श मानता है। श्रीराम नवमी का हिंदू धर्म में विशेष महत्व है। हिंदू धर्म में आस्था रखनेवाले सभी लोग श्रीराम नवमी के दिन सीता-राम के विवाह का उत्सव मनाते हैं और श्रीराम और हनुमान के मंदिरों में विशेष पूजा करते हैं।

श्रीराम नवमी से संबंधित मान्यता :

हिंदू मान्यताओं के अनुसार भगवान राम का जन्म राजा दशरथ और कौशल्या पुत्र के रूप में हुआ था। राम का जन्म त्रेतायुग में चैत्र की शुद्ध नवमी को वसंत ऋतु में पुनर्वसु नक्षत्र में दोपहर बारह बजे कर्क लग्न में हुआ था। इसीलिए इस शुभ दिन के अवसर पर भारत में हर वर्ष श्रीराम नवमी का त्योहार मनाने की परंपरा है। इस वर्ष (2025 में) श्रीराम नवमी का त्योहार 6 अप्रैल को मनाया जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार राम भगवान विष्णु के सातवें अवतार है। बचपन से ही उनमें कोई लालच या बुराइया नहीं थीं। इसलिए श्रीराम को सर्वश्रेष्ठ पुरुषोत्तम माना गया। इतिहास साक्षी है कि उन्होंने किसी को कोई कष्ट दिए बिना राज्य का शासन किया। इसलिए श्रीराम नवमी के दिन लोग श्रीराम के आशीर्वाद पाने और कार्यसिद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं।

श्रीराम नवमी का महत्व :

रामायण में बताया गया कि ऋषि वशिष्ठ ने भगवान राम को यह नाम दिया था। राम का अर्थ है 'रमंते योगिनो यत्र राम' अर्थात् जिस देवता से योगी आनंद प्राप्त करते हैं, वह राम है। लोगों का विश्वास है कि श्रीराम नवमी के दिन राम का नाम जपने से कई गुना पुण्य फल की प्राप्ति होती है। कहा जाता है कि सीता-राम का विवाह भी श्रीराम नवमी के दिन हुआ और राज्याभिषेक भी उसी दिन हुआ था। इसलिए सीता-राम विवाह(कल्याणम) तेलुगु क्षेत्रों के अलावा पूरे भारत में और अन्य देशों में होता है। मान्यता है कि श्रीराम नवमी पर विशेष पूजा-अर्चना, विवाह समारोह आयोजित करने और राम मंत्रों का जप करने

से भक्तों को हजार गुना फल मिलता है। इसके अलावा पंडितों का कहना है कि पूर्ण श्रद्धा के साथ राम का नाम जपने से कई समस्याएँ दूर हो जाती हैं।

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।।

श्रीराम नवमी से संबंधित इतिहास :

जैसे पहले ही बताया गया कि श्रीराम नवमी का त्योहार चैत्र माह के शुक्ल पक्ष नवमी को मनाया जाता है। हिंदू धर्मशास्त्रों के अनुसार इस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्रजी का जन्म हुआ था। इसलिए उनके जन्म के सुअवसर पर यह त्योहार मनाने की रिवाज है। राम-जन्म के बारे में 'रामचरितमानस' में कहा गया कि -

नौमी तिथि मधु मास पुनीता।
सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता।।
मध्यदिवस अति सीत न घामा।
पावन काल लोक बिश्रामा।।

अर्थात् पवित्र चैत्र का महीना था, नवमी तिथि थी। शुक्लपक्ष और भगवान का प्रिय

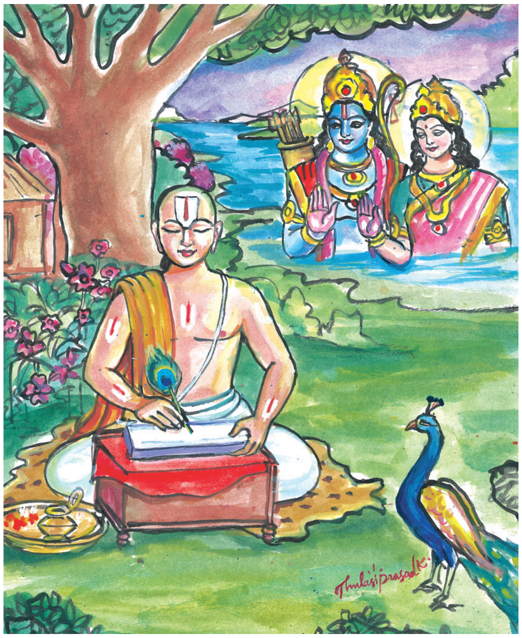

अभिजित मुहूर्त था। दोपहर का समय था। न बहुत सर्दी थी, न धूप या गरमी थी। उस पवित्र समय में सब लोकों को शान्ति देनेवाले श्रीराम का जन्म हुआ।

रावण के अत्याचारों से देवताओं और ऋषि-मुनियों की रक्षा करने के लिए और उसका वध करके धर्म की पुनःस्थापना के लिए भगवान विष्णु ने त्रेतायुग में मानव का रूप धारण किया। त्रेतायुग में रावण ने कठोर तपस्या करके शिवजी से ऐसा वर मांगा था कि मुझे कोई न मार सके अर्थात् देवता, यक्ष, किन्नर, गंधर्व आदि। शिवजी से वर मांगते समय रावण ने मनुष्य को निर्बल समझकर उनका नाम नहीं लिया। इसीलिए विष्णु ने राम के रूप में मानव रूप धारण किया। इसका वर्णन तुलसीदासकृत 'रामचरितमानस' और 'विनयपत्रिका' में मिलता है।

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छानिर्मित तनु माया गुन गो पार।।

अर्थात् ब्राह्मण, गौ, देवता और संतों के लिए भगवान ने मनुष्य का अवतार लिया। वे (अज्ञानमयी, मलिना) माया और उसके गुण (सत्, रज, तम) और (बाहरी तथा भीतरी) इंद्रियों से परे हैं। उनका (दिव्य) शरीर अपनी इच्छा से ही बना है। किसी कर्मबंधनों से परवश होकर त्रिगुणात्मक भौतिक पदार्थों के द्वारा नहीं।

तुलसीदास ने अपनी विनयपत्रिका में श्रीरामचंद्र की स्तुति इस प्रकार की -

जयति सच्चिद्व्यापकानंद परब्रह्म, बिग्रह-व्यक्त लीलावतारी।
बिकल ब्रह्मादि, सुर, सिद्ध संकोचबस, बिमल गुनगेह नर-देहधारी।।

जय कोसलाधीस कल्यान कोसलसुता, कुसल कैवल्य-फल-चारु चारी।
बेद-बोधित कर्म-धर्म-धरनी-धेनु, बिप्र-सेवक-साधु-मोदकारी।।

इसका भाव है कि हे श्रीराम! आपकी जय हो। आप सत, चेतन, व्यापक, आनंदस्वरूप परब्रह्म हैं। आपने लीला करने के लिए ही अवतार लिया और साकार रूप में प्रकट हुए। जब ब्रह्म आदि देवता और सिद्ध आदि दैत्यों के अत्याचारों से व्याकुल हो उठे थे, तब उनके कष्टों को दूर करने के लिए ही आपने विशुद्ध-गुण विशिष्ट नर-शरीर धारण किया था। अर्थात् संकट में फंसे हुए देवताओं तथा सिद्ध मुनियों के हितार्थ ही आपने मानव रूप ग्रहण किया।

हे कौशलाधिपति आपकी जय हो। आपने अवध नरेश महाराज दशरथ और कौशल-पुत्री महारानी कौशल्या के यहाँ चार भाइयों के रूप में इस प्रकार जन्म लिया था मानो उन्हें चार फलों की प्राप्ति हो गयी हो। भाव है कि जब आपने भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के साथ महाराज दशरथ के यहाँ जन्म लिया था तो उन्हें उसी प्रकार की आनंदानुभूति हुई थी, मानो उन्हें सालोक्य, सामीप्य, सायुज्य और सारूप्य नामक मोक्ष के चार फल प्राप्त हो गये हों। हे राम! आपने वेदों में बताये गये कर्मों और धर्म का पालन किया है तथा पृथ्वी, गाय, ब्राह्मणों और भक्तों, साधुओं को अपार सुख पहुँचाया है।

श्रीराम नवमी का आयोजन :

श्रीराम नवमी के दौरान हिंदू लोग राम और हनुमान मंदिरों तथा अपने घरों में सीता राम के विवाह का आयोजन करते हैं। अंत में सीता राम की मूर्ति को गाँव या नगर की गली-गली में जुलूस के साथ घुमाकर पूजा करते हैं। सीता राम का विवाह मंदिर के पंडितों द्वारा संपन्न किया जाता है। श्रीराम नवमी के अवसर पर बडी संख्या में भक्तगण आते हैं। गुड और कालीमिर्च से गुड पानी बनाया जाता है, उसे 'पानकम' बोलते हैं। पानकम के साथ 'वडपप्पु (मूंगदाल से)' भी तैयार किया जाता है जो प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है। इसके संबंध में आयुर्वेदिक पंडितों की मान्यता है कि इस प्रसाद का सेवन करने से मनुष्य स्वस्थ बनता है। देवीभागवत में बताया गया है कि गर्मी का दुष्प्रभाव मनुष्य पर पडता है। इसलिए नवमी के प्रसाद में उपयोग की जानेवाली कालीमिर्च और इलाची दवा का काम करके उस मौसम में होनेवाली गले की बीमारियों को दूर करती हैं और वडपप्पु (मूंगदाल) से शरीर शांत हो जाता है। इस त्योहार के अवसर पर हिंदू लोग उपवास भी रहते हैं।

हिंदुओं की मान्यता है कि यदि देश के सभी लोग समृद्ध और खुश हैं, तो वह राम का राज्य माना जाता है। यह त्योहार प्रायः अप्रैल के महीने में आता है। यह सुबह सूर्य भगवान की प्रार्थना के साथ आरंभ होता है। राम का जन्म दोपहर के समय हुआ था। इसलिए उसी समय विशेष पूजा-

अर्चना की जाती है। श्रीराम नवमी ग्रीष्मऋतु के आरंभ में आती है। गर्मी के दिनों में सूर्य उत्तरी गोलार्ध के समीप आता है। ऐसा कहा जाता है कि सूर्य, सूर्य वंश के देवता है। उसी वंश में राम का जन्म हुआ था। सूर्य और राम के अक्षरों में साम्यता भी है। सूर्य का दूसरा नाम 'रवि' है। प्राचीन मिस्र की सभ्यता में सूर्य को ''आमोन रा'' या ''रा'' कहा जाता था। यह ''र'' लैटिन में प्रकाश को भी सूचित करता है। उदाहरण के लिए रेडियम, रेडियंस आदि। इससे स्पष्ट होता है कि राम और सूर्य में साम्यता है।

श्रीराम नवमी का त्योहार बहुत वैभव के साथ पूरे भारत में मनाया जाता है। उस दिन भद्राचलम (तेलंगाना) और ओंटिमिट्टा (आन्ध्रप्रदेश) में भी वहाँ के मुख्यमंत्रियों के द्वारा सीता-राम को कल्याणोत्सव के अवसर पर पवित्र रेशमी वस्त्र समर्पण करके बहुत निष्ठा के साथ यह त्योहार मनाया जाता है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि भारत में साल भर में विविध प्रकार के त्योहार मनाये जाते हैं। इन त्योहारों का उद्देश्य जनता में एकता की भावना को जागृत करना ही है। इसके साथ-साथ भगवान के प्रति आस्था दिखाना और लोगों को मानसिक उल्लास प्रदान करना है। श्रीराम नवमी द्वारा भारतीय समाज में सीता-राम के आदर्श गुणों की ओर संकेत किया जाता है।

(गतांक से)

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

चतुर्थ आश्वास

तेलुगु मूल

मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद

आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

'गुरु के द्वारा बताये औषध को हरि ने उस चोट पर लगाने की कोशिश में थे।' सूत के इस रूप में बताने पर शौनकादि ने बडी दया के साथ सूत को देखकर इस रूप में कहा। "हे रोम महर्षि के पुत्र! तिंत्रिणी वृक्ष का वृत्तांत, बांबी का विधान आदि के वृत्तांत को हमें बताओ। उस कथा को सुनने की इच्छा हुई। विश्व के जनों को पैदा करके और उनकी रक्षा करनेवाले और उन का लय करनेवाले सर्वज्ञ को ऐसी अपदाएँ क्यों हुई हैं? इसे सुनकर हमें मन में दुःख हो रहा है। हे महात्मा! इसे अच्छी तरह हमें बताइए।" इस रूप में उन के पूछने पर सूत ने इस रूप में बताया। "विष्णु के चरित अतिगूढ हैं। विशद रूप से बताना क्या किसी को संभव है?"

वल्मीक एवं तिंत्रिणी वृक्ष का प्रभाव :

फिर भी जितना कुछ मुझे मालूम है बताऊँगा। वह ऐसा है कि त्रेतायुग में दशरथ और कौसल्या देवी दोनों देह मुक्त होते समय श्रीरामचंद्र के प्रति अपने वात्सल्य भाव को छोड नहीं पाये। पुत्र पर उन का मोह दूर नहीं हुआ। उसी अवस्था में उनका देहांत हो गया। उस ऋणानुबंध से राम और कृष्ण अवतार के लिए जिम्मेदार हरि को दोनों तरफ होते वास प्रदान करने के लिए दशरथ के तेजस से तिंत्रिणी वृक्ष और कौसल्या के तेजस से बांबी को ब्रह्म ने वेंकटाद्री में निर्माण किया। उसी प्रकार वसुदेव और देवकी के देह-मुक्त होते समय श्रीकृष्ण पर अपने वात्सल्य भाव को छोड नहीं पाये। पुत्र पर उन का भी मोह दूर नहीं हुआ। उसी अवस्था में उन का देहांत हो गया। इस कारण से दशरथ के तेजस से बने तिंत्रिणी वृक्ष में वसुदेव के तेजस को तथा कौसल्या के तेजस से निर्मित बांबी में देवकी के तेजस को खडा किया। इसलिए राम-कृष्ण अवतार कलित श्रीहरि ने मातृ गर्भ में रहनेवाले शिशु की तरह दस हजार वर्ष उस तिंत्रिणी वृक्ष के नीचे रहनेवाली बांबी में वास किया। इसलिए दशरथ ही तिंत्रिणी वृक्ष है, कौसल्या ही वल्मीक है। लक्ष्मण ही शेषाचल पर्वत है। अयोध्या ही उस पर्वत का वन प्रदेश है। सरयू नदी ही श्रीस्वामिपुष्करिणी है, रामचंद्र ही वल्मीकवासी श्री वेंकटेश्वर हैं। तदूपरांत वसुदेव ही

तिंत्रिणी वृक्ष है, देवकी देवी ही वल्मीक है। बलभद्र ही शेषाचल पर्वत है। मधुरा ही उस पर्वत का वन प्रदेश है। यमुना नदी ही श्रीस्वामिपुष्करिणी, यादवगण ही मृग हैं, गोपिकाएँ ही पक्षीगण हैं। श्रीकृष्ण ही वल्मीकवासी श्री वेंकटेश्वर हैं। वैकुंठ ही निगमागम मय शेषाचल है। विरजा नदी ही सुवर्ण मुखी, नारायण ही लीला मानस विग्रह श्रीनिवास हैं। इन के अतिरिक्त शेषाचल पर विचरण करनेवाले पक्षीगण मुक्त ब्रह्म हैं, अनेक मुक्त रुद्र, अनेक मृग हैं, सनकसनंदादि वनचरोत्तम हैं। इस रूप में इन सब के होते परमपुरुष श्री वेंकटेश्वर इस शेषाचल पर क्रीडा विनोद करते रहते हैं। अपने को शरीर का दर्द सता रहा है, ऐसा नाटक मात्र ही कर रहे हैं, असल में उन्हें कोई बाधा सता नहीं सकती है। आप लोग सुनिए! उस स्वामी के दर्शन करने की इच्छा रखनेवाले सारे सत्कर्म सिद्धियाँ प्राप्त करते हैं। यह कहते सूत ने आगे इस रूप में कहा। श्रीवैकुंठ को छोडकर शेषाचल पर वल्मीक के गर्भ में रहनेवाले श्रीनिवास के अनेक चित्र-विचित्र कार्यों को सुना है। और श्रीनिवास के मनुष्य के रूप में मनुष्यों से किए क्रीडा-विनोद और एक सामान्य मनुष्य के रूप में किए गए नाटकों के बारे में सुरुचिपूर्ण ढंग से बताऊंगा। सुनिए! औषध के बारे में बृहस्पति के द्वारा बताये गए उपाय के अनुसार औषध को लगानेवाले कोई हित व्यक्ति उन्हें नहीं मिला। तब श्रीनिवास चिंता में पड गए। 'अब मैं क्या करूँ?' इस रूप में सोचते अपने औषध को स्वयं लाने के लिए प्रातःकाल ही अकेले निकल पडे। तब वराहस्वामी वृषभासुर से युद्ध करके उसे संहार करके बाद में भूदेवी के साथ उस पर्वत की गुफाओं एवं श्रृंगों पर विहार कर रहे थे। बहु वर्षों

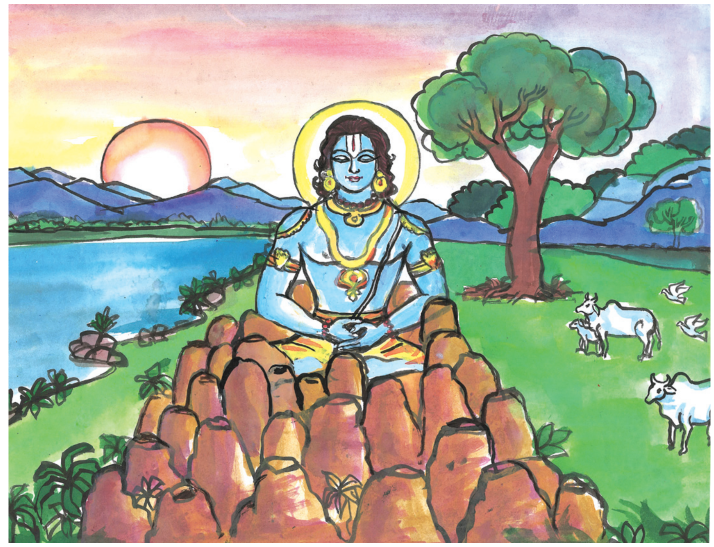

के बाद फिर से शेषाचल का स्मरण करके शेषाचल के मार्ग से आनेवाले श्रीनिवास को देखकर वराह स्वामी ने उसे कोई राक्षस समझ लिया। शायद अपने से युद्ध करने के लिए आया है, समझा। वराह स्वामी उन्हें देखकर अट्टहास करते हुए, सारे विश्व उस ध्वनि से कांप गए हो, बडा हुंकार किया। इस महा हुंकार ध्वनि से डर कर नारायण स्वामी एक झुरमुट में छिप गये। युद्ध किए बिना इस रूप में छिपनेवाले वराह स्वामी को देखकर गर्व से अपने विकार आकार के साथ दांतें निफोरते हुए वे शीघ्र ही झुरमुट में घुस आए। तब श्रीहरि एक कोने में दुबक कर छिप गए।

वराह - श्रीनिवास के संवाद :

वैसे दुबक कर आंखों से आँसू निकालनेवाले स्वामी की दीन अवस्था को देखकर वह राक्षस नहीं है। बल्कि राक्षस का शिकार हुआ समझ कर 'अकारण ही इस पर क्रोध दिखाया' मन में सोचते वराह स्वामी भी बाष्पपूरित लोचनों से उसे देखकर लीला मानुष के रूप में उसे पहचान कर पास जाकर 'मत रो' कहते हुए इस रूप में कहा। ''वैकुंठ को छोड कर निकल कर आने का कारण क्या है? सिरि हृदय पर नहीं है, यह विचित्र क्यों है? मनुष्य के आकार में क्यों हो? सिर पर चोट कैसे लगी है? अत्यंत बलवान हो, फिर भी इस रूप में दुबक कर छिपने का कारण क्या है? आँखों से आँसू क्यों

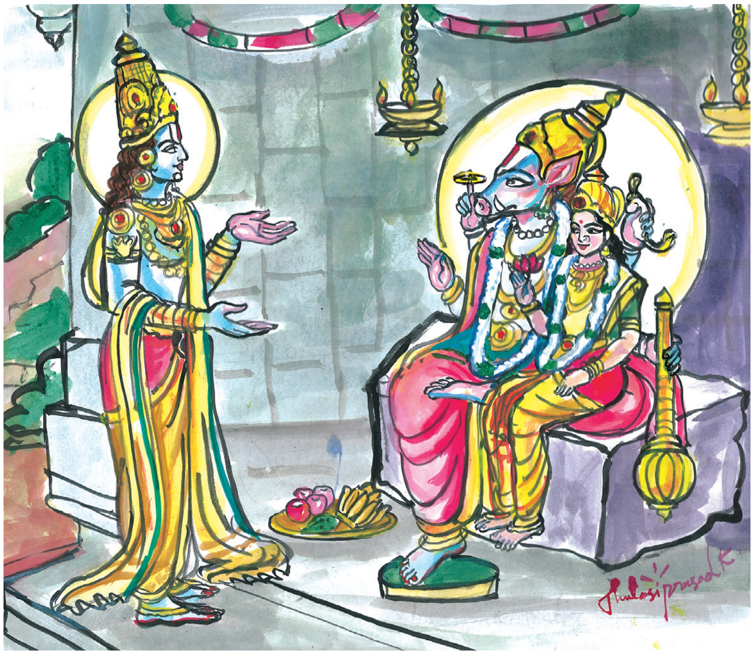

बहा रहे हो? मेरे हुंकार करने पर खडे होकर बात किए बिना इस रूप में छिप जाने का कारण क्या है? तुम्हारा यह व्यवहार मुझे विचित्र लग रहा है। सच सच बताओ।'' ऐसा स्नेह से वराह स्वामी ने श्रीहरि से पूछा। तब निष्कपट भाव से दीनता में भू वराहस्वामी को देखकर श्रीहरि ने इस रूप में बताया।

''सुनो! वराहा रूपा! मेरा सारा वृत्तांत। सिरि को हृदय पर धारण करके मैं वैकुंठ में था। तब भृगु ने मेरे वक्ष पर लात मारी। तब सिरि मेरे हृदय से निकल कर 'परपुरुष के पदाघात लगने के कारण मैं यहाँ नहीं रहूँगी' कहते रूठ कर कोल्हापुर जाकर लक्ष्मी ने वैराग्य लिया। इसलिए पारिवारिक सुख को त्याग करके मैं आप के पास आकर इस वल्मीक में दुबक कर रहते समय एक ग्वाले ने परशु से मेरे सिर पर मारा है। उस चोट को भरने के लिए बृहस्पति ने औषध बताया। उस औषध को इस गिरि पर ढूंढते हे विमल शरीरा! शीघ्र ही आप को देखा है। सिर की चोट सताने पर कमजोर पड गया। बलवान होते उत्साह से आप के हुंकार को सुन कर डर कर हे महात्मा! झुरमुट में छिप गया। मुझ पर दया से आप ने मुझ से बात की है। इससे मन में रहनेवाली पूर्व चिंता मिट गयी। हे वराह! अपना समझ कर मुझे अपने ही पास रख लीजिए। उस वैकुंठ को छोड कर आप को ही मैं समझ कर बडे स्नेह से यहाँ बस गया हूँ। जल्दी में आप कहाँ पर हैं, पहचान नहीं पाया।'' हरि के इस रूप में पूछने पर वराह स्वामी ने कहा। ''इस पर्वत पर वृषभासुर नामक एक राक्षस बस कर मुनिजनों को कष्ट दे रहा था। इसलिए मैंने उस राक्षस से बहु दिन घोर युद्ध करके उस माया राक्षस का संहार किया। यहाँ आकर तुम को देखा है। मुझे भी तुम ने अब देखा है। तुझे और मुझे अब स्नेह हो गया है। इसलिए हे इंदिरेश! आनंद से रहो।'' वराह स्वामी के स्नेह से इस रूप में बोलने से सुन कर संतोष के साथ श्रीहरि ने इस रूप में कहा। ''अवनि में कलियुगांत तक मुझे रहने के लिए आप जगह बताइए।'' इस रूप में श्रीहरि के बोलने से सुन कर ''यह क्या है?'' संशय के साथ वराह स्वामी ने पूछा। ''हे हरि! गरीबों में आशा पैदा नहीं करनी चाहिए। उसी रूप में बलवानों को आश्रय नहीं देना चाहिए, उचित धन देने से यहाँ नाप कर आप को सौ कदम भूमि दूंगा।'' वराह स्वामी के इस रूप में बोलने से श्रीहरि ने इस रूप में कहा।

''लक्ष्मी जो धन मेरे पास छोड कर गयी है, उसे मैं तुझे दे दूंगा। किंतु लक्ष्मी अब मुझे छोड कर कोल्हापुर चली गयी है। तुम्हें देने के लिए मेरे पास धन कहाँ से आयेगा? जन से याचना करके मुझे जीवन काटना है।'' हरि की इन बातों को सुन कर महा महान वराह देव ने इस रूप में कहा। ''यह कैसी बात है? बिना धन के भूमि नहीं दूंगा।'' कहनेवाले वराह स्वामी को देखकर हँसते हुए माधव ने कहा। ''पूरा धरातल आप के वश में आ रहा

है। थोडा मुझे दे दीजिए। जितना आप देंगे उतने में ही मैं रहूँगा। जीवन काटने के लिए नर के रूप में नाटक करते हुए यहाँ पर नरों को आने के लिए मजबूर करके आप को नित्य पंचामृत अभिषेक मुफ्त में कराऊंगा। आप के तीर्थ में डुबकी लगाकर आप की पूजा करके उपहारादि आप को चढाने केलिए अपने भक्तों से कहूँगा। इससे बढकर पहले आप के भोजन करने के बाद ही मैं बाद में भोजन करूँगा।'' कहने पर स्वीकार करके वराह देव ने श्रीहरि को वहाँ ठीक से सौ कदम नाप कर भूमि दी है।

इस प्रकार वराह स्वामी ने श्रीहरि का आदर करके फिर से उन्हें शेषाचल पर खडा किया। तब दोनों के शीर्षो पर देवताओं ने फूलों की वर्षा की है। अनेक प्रकार से विनति की। तब वराह स्वामी ने अपने पास लोक हितार्थ रहनेवाली वकुला मालिका के पास श्रीहरि को सौंपकर 'अन्नपान, औषध आदि सर्वोपचार करते रहने के लिए' वकुला मालिका से कहा। तब वकुला मालिका ने श्रीहरि को श्यामकान्न और शहद भोजन के लिए दिया। चोट पर औषध भी लगाया। यह देखकर गाय-बछडे के रूप में दूध देकर तृप्त होने वाले ब्रह्म और रुद्र संतोष के साथ शेषाचल छोड कर अंतर्धान हो गए। अपने निजी स्थानों पर लौट गए। तब श्रीनिवास उस पर्वत पर सकल विनोद करने लगे।

भक्तहीनों को मोहक बन कर, परम भक्तों को सकल सिद्धियाँ प्रदान करते हुए, राक्षसों के लिए सिंहस्वप्न बन कर, देवताओं का विनोद करते हुए, सिर की चोट से मुक्त होकर, दिव्य सौंदर्य लीला मानुष विग्रह के रूप में माँ के पास लाडले पुत्र के रूप में वकुला मालिका के पास नाटक करते रहे। यह बतानेवाले सूत को देखकर शौनकादि मुनियों ने इस रूप में कहा।

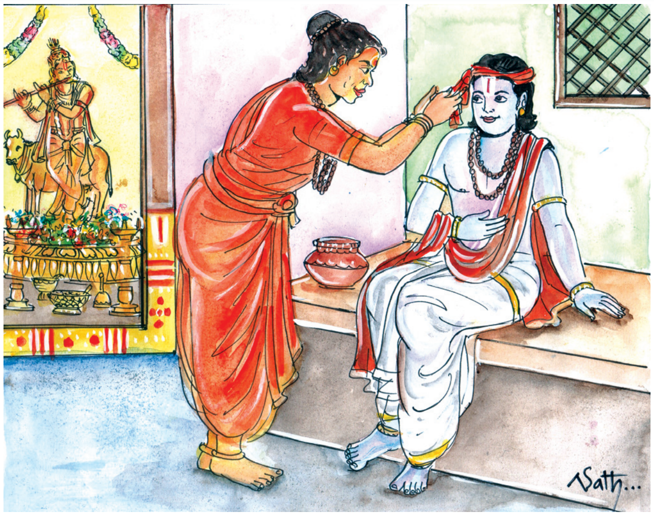

वकुला मालिका वृत्तांत :

''वकुला मालिका कौन है? उनके अकलंक चरित के बारे में हमें बताइए।'' पूछने पर सूत ने इस रूप में कहा। ''द्वापरयुग में श्रीकृष्ण की पोषित माँ श्री यशोदा देवी बालक श्रीकृष्ण पर पुत्र वात्सल्य दिखा कर कालांतर में देह-मुक्त हो गयी। उस ऋणानुबंधन को मानते हुए ब्रह्म ने उन्हें अगले जन्म में वकुला मालिका नाम से पैदा करके भू वराह स्वामी के पास छोडा है। वराह स्वामी ने श्रीनिवास को उन के संरक्षण में रखा। तब वे माँ की तरह श्रीनिवास की सेवा करने लगी हैं। औषध लाकर उन्होंने श्रीनिवास की चोट को ठीक किया। श्रीनिवास तब शेषगिरींद्र पर रहते विस्तार से क्रीडा-विनोद करने लगे। उन्होंने पूर्ण श्रृंगार लीलाओं से परिपूर्ण राज कन्या के साथ श्रीनिवास का विवाह करना चाहा। सूत के इस रूप में बताने के बाद शौनकादि ने सूत से पूछा।'' ''रमापति के लिए अनुकूल कन्या कहाँ मिली? उस के माता-पिता, भाई, बहन कौन है? इस के बारे में आप हमें विस्तार से बताइए।'' इस रूप में पूछने पर सूत ने इस रूप में कहा। भूमि पर आठवें द्वापांतर में कलियुग के आरंभ में विक्रमार्क मुख्य राजाओं का जन्म हुआ। उन्होंने धरती पर सुपालन किया। वे बाद में स्वर्ग लोक चले गए।

क्रमशः

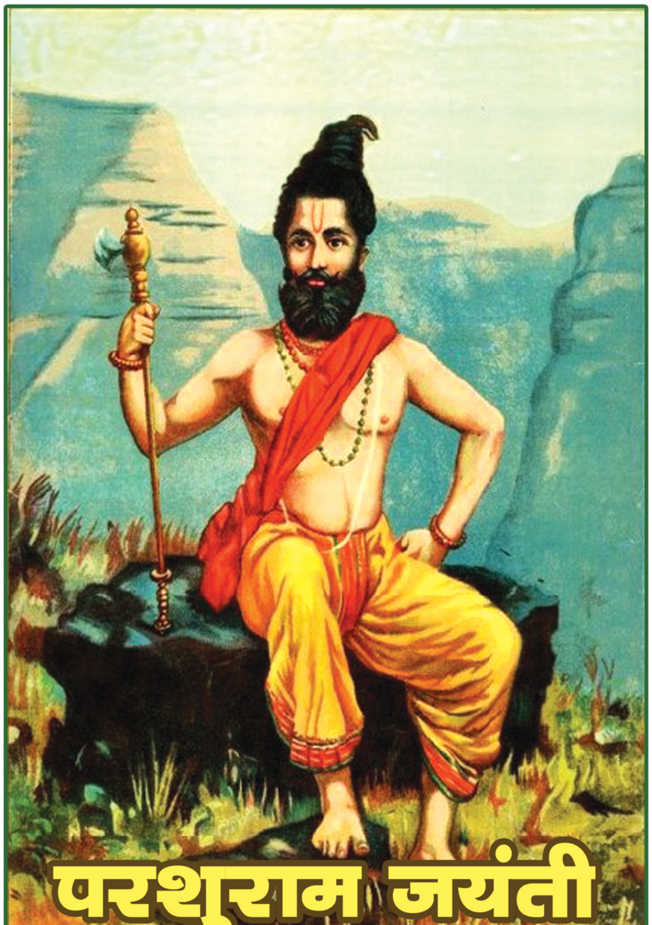

परशुराम जयंती

- डॉ एस हरि

भगवान विष्णु को अवतार पुरुष कहा जाता है। क्योंकि वे समय-समय पर विभिन्न अवतारों में प्रकट होकर धर्म की स्थापना और अधर्म का उन्मूलन करते रहे हैं। 'अवतार' का अर्थ है संकट के समय भगवान का धरती पर अवतरण। अर्थात् जन्म लेना।

सनातन धर्म में भगवान विष्णु को सृष्टि का पालक और धर्म का संरक्षक माना जाता है। जब-जब संसार में अधर्म की वृद्धि होती है तथा धर्म संकट में पड़ता है, तब-तब विष्णु भगवान अवतार धारण कर दुष्टों का संहार और शिष्टों का संरक्षण करते हैं और धर्म की पुनःस्थापन करते हैं। इसी विषय को 'भगवद्गीता' में भी दर्शाया गया है।

'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥'

अर्थात्, जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब मैं स्वयं अवतरित होता हूँ।

भगवान विष्णु के दशावतारों का वर्णन विष्णु पुराण, भागवत, महाभारत और अन्य ग्रंथों में मिलता है। इनमें प्रत्येक अवतार की एक विशेष भूमिका होती है, जो उस समय के समाज और समय के अनुरूप होती है।

परशुराम जयंती का वैशिष्ट्य :

परशुराम भगवान विष्णु के छठे अवतार माने जाते हैं, जो शस्त्र और शास्त्र दोनों में निपुण थे। परशुराम की जयंती उनके जन्मदिन के उपलक्ष में मनाई जाती है। यह हिंदुओं के लिए एक पावन पर्व के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है।

हिंदू पंचांग के अनुसार उनकी जयंती वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाई जाती है। जिसे अक्षय तृतीया भी कहा जाता है। यह केवल एक धार्मिक उत्सव ही नही; बल्कि न्याय, धर्म, शौर्य और कर्त्तव्य परायणता का प्रतीक है। वे चिरंजीवि (अमर) है, शिव के शिष्य हैं, महान योद्धा और गुरु हैं।

परशुराम जयंती का महत्व :

भगवान परशुराम जयंती का अपना विशेष महत्व है। यह जयंती अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए मनाई जाती है। परशुराम जयंती हमें सिखाती हैं कि हमें अपना शक्तियों का प्रयोग अन्याय और अधर्म के विरुद्ध करना चाहिए और सदैव धर्म की स्थापना में लगे रहना चाहिए यह पर्व हमें सत्य, न्याय और कर्त्तव्यपरायणता के पर चलने की प्रेरणा देता है।

भगवान परशुराम का जीवन दर्शाता है कि जब भी समाज में अन्याय व अधर्म बढ़ता है, तब धर्म की रक्षा के लिए समर्पित होना आवश्यक होता है। हमें अपने कर्मों में संयम, साहस और विवेक बनाए रखते हुए हमेशा एक

आदर्श पथ को अपनाना चाहिए ताकि समाज में सत्य और न्याय की स्थापना हो सके।

परशुराम में ये सारे गुण विद्यमान हैं, अतः वे हमारे लिए आदर्श योद्धा भी हैं। उनका जीवन न केवल शौर्य और पराक्रम का प्रतीक है, बल्कि संयम, तपस्या और धर्मपरायणता का भी आदर्श प्रस्तुत करता है। वे न केवल एक महान योद्धा थे, बल्कि एक ज्ञानी और गुरु भी थे, जिन्होंने अनेक वीरों को शिक्षा दी। उनके आदर्श हमें सिखाते हैं कि शक्ति का प्रयोग सदैव धर्म और सत्य की रक्षा के लिए किया जाना चाहिए। इसलिए, परशुराम जयंती केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि धर्म, कर्त्तव्य और न्याय के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को पुनःस्मरण कराने का अवसर है।

1. ऐतिहासिक महत्व :

- परशुराम जी का जन्म त्रेतायुग में हुआ और उन्होंने कई युगों तक धर्म की स्थापना की।
- वे एक मात्र चिरंजीवि हैं, जो भविष्य में भगवान कल्कि के गुरु बनेंगे।

2. धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व :

यह पर्व से हमें सिखाता है कि जब भी अन्याय व अधर्म बढ़ता है, तब धर्म की रक्षा के लिए संघर्ष आवश्यक है।

उनका जीवन जप, तप, त्याग, सत्य और न्याय का संदेश देता है, जिससे समाज में आध्यात्मिक चेतना और नैतिक मूल्यों का विकास होता है।

3. सामाजिक महत्व :

यह पर्व समाज में एकता, समानता और सामूहिकता की भावना को मजबूत करता है। साथ ही परस्पर सहयोग, सद्भावना तथा मेल-मिलाप को बढ़ावा देता है। इससे समाज में नई पीढ़ी को समाज-सेवा की प्रेरणा मिलती है।

4. सांस्कृतिक महत्व :

यह जयंती हिंदू संस्कृति और परंपराओं को जीवंत बनाए रखती है और विभिन्न समुदायों को चोड़ती है।

5. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महत्व :

परशुराम जी का आदर्श न केवल त्रेतायुग तक सीमित है, बल्कि वह आधुनिक युग और भावी युगों के लिए भी जबरदस्त आधार प्रस्तुत करता है। क्योंकि सत्य, न्याय, अहिंसा धर्म और कर्त्तव्य के प्रति समर्पण हर युग में आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है।

निष्कर्ष :

इस प्रकार परशुराम जयंती केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं है, बल्कि यह सत्य, अहिंसा धर्म और न्याय के प्रति हमारी आस्था को मजबूत करती है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहना ही सच्चा धर्म है। यही संदेश परशुराम जीवन से मिलता है, जिससे उनकी प्रासंगिकता स्वतः सिद्ध होती है।

मई 2025

02 श्री रामानुज जयंती, श्री शंकर जयंती
06-08 तिरुमल श्री पद्मावती श्रीनिवास का परिणयमहोत्सव
09-12 तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का वसंतोत्सव
11 श्री नृसिंह जयंती, तरिगोंडा वेंगमांबा जयंती
11-19 ऋषिकेश, नारायणवनम् श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी का ब्रह्मोत्सव
12 श्री कूर्म जयंती, श्री अन्नमय्या जयंती
13 तिरुपति गंगजातरा (मेला)
15 श्री सरस्वती नदी का पुष्कर प्रारंभ
19-27 कार्वेटिनगरम् श्री वेणुगोपालस्वामी का ब्रह्मोत्सव
22 हनुमज्जयंती

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यड्लपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

कुलशेखर आल्वार

कुलशेखर आल्वार का जन्म केरला के तिरुवानजिक्कलम में हुआ था। ये दृढ़व्रत महाराज के पुत्र हैं। इन्होंने ''पेरुमाल तिरुमोलि'' की रचना की है। इसके 11 पाशुरम वेंगडम पर हैं। आपने ''मुकुंदमाला'' की रचना भी की है।

पाशुरम 1 में कुलशेखर आल्वार कहते हैं कि सप्तगिरियों पर विलसित उस देव की सेवा में वे लीन होना चाहते हैं जिन्होंने नीलादेवी से विवाह बन्धन में जुडना चाहा है। शरीर में माँस बढाने के लिए वे पुनः मानव जन्म पाना नहीं चाहते हैं। स्वामी की ''कोनेरु''(पुष्करिणी) में बगुला बनना इससे बेहतर समझते हैं। वेंगडम् के शंखधारी अधिदेव की समुन्नत प्रकृति के बीच रहना पसंद करते हैं।

पाशुरम 2 में वे स्पष्ट करते हैं कि वे स्वर्ग में रंभा और आदि अप्सराओं के बीच रहकर आनंद प्राप्त करना नहीं चाहते हैं। पृथ्वी पर सम्राट बनकर शासन करना नहीं चाहते हैं। वे केवल तिरुवेंगडम् के सरोवरों में मछली बनकर तैरना पसंद करते हैं।

पाशुरम 3 में वे भगवान के सुवर्ण पीकदान को अपने हाथों में लेने की लालसा व्यक्त करते हैं। तिरुवेंगडम् पर भगवान के उज्वल चक्र की चमक की आभा में उनके सामने रह जाना चाहते हैं। क्योंकि उनके सामने भगवान हैं और वे भगवान के अन्य सेवकों के बीच होंगे। शिव, ब्रह्म और इन्द्र भी वैकुंठम् के प्रधान द्वार पर प्रवेश के लिए एक दूसरे से होड रत रहते हैं। प्रधान आलय में घुसने के प्रयत्न में लगे रहते हैं।

पाशुरम 4 में वे इच्छा प्रकट करते हैं कि उन्हें वेंगडम् पर चंपक वृक्ष के रूप में जन्म लेने का अवसर प्राप्त हो जिस पर बैठकर भृंगों के अमृत नाद आलाप को सुनते हुए मायावी वेंकटेश के दिव्य चरणों का दर्शन करना संभव हो जाय।

पाशुरम 5 में कहते हैं कि मस्त हाथी पर चढकर वैभव यात्रा करना नहीं चाहते हैं। राजभोग और विलास में डूबे रहना नहीं चाहते हैं। उनकी एकमात्र कामना हैं कि वेंगडम् पर उनका जन्म हो और परमात्मा की सेवा में वे लीन रहें।

पाशुरम 6 में वे घोषित करते हैं कि उनको ऊर्वशी, मेनका आदि अप्सराओं का नाच पसंद नहीं है। लेकिन

वेंगडम् पर भौंरों के साथ मिलकर उडना और गाना बहुत पसंद है। उन्हें अत्यंत प्रिय है।

पाशुरम 7 में वे एक कदम आगे बढाकर कहते हैं कि सामंतों के सम्राट बनकर उन पर शासन करना पसंद नहीं करते हैं। श्वेत छत्र छाया में मागदों को गानों के बीच प्रशंसात्मक गीत सुनते हुए उत्सव मनाना नहीं चाहते हैं। लेकिन वेंगडम् की स्रोतस्विनी (नदी) बनकर पुष्पित वनों में से गुजरती बहना उन्हें प्रिय लगता है।

पाशुरम 8 में तो तिरुवेंगडम् पर्वत का पथ (रास्ता) बनने की इच्छा प्रकट करते हैं। यह पर्वत तो परम पवित्र धाम है। वेदों से प्रशंसित है। चंद्रशेखर शिव की इच्छाओं की पूर्ति करनेवाली स्थली है। ब्रह्म, इन्द्र आदियों की याग भूमि है। वे यहाँ यज्ञ करते हैं अपने अपने महत्व और अपनी श्रद्धा के अनुरूप।

पाशुरम 9 में वे भगवान से प्रार्थना करते हैं कि ''हे लक्ष्मीपति! हे परात्पर! महावृक्षों के समान बढनेवाले मानवों के क्रूर कर्मो का नाश करनेवाले भगवान! हे वेंगडम्वासी! मुझे आप के मंदिर की प्रथम सीढी बनने का अवसर प्रदान कीजिए। उस पर आपके भक्त चरण रखकर चलते हैं तो मुझे आनंद मिलता है। आपके मृदु मधुर अधरों के दर्शन के लिए भक्त, देवता, अप्सराएँ आदि सब कदम रखकर चलें।''

पाशुरम 10 में वे कहते हैं कि उनके मन में उच्चतम साम्राज्यों को अपने अधिकार में लाने की इच्छा लेशमात्र भी नहीं है। वे ऊर्वशी को पाना भी नहीं चाहते हैं। वे वेंगडम् के नाथ के अधरों पर रह जानेवाली कोई भी वस्तु बनना चाहते हैं। उस क्षण के लिए लालाइत हो तडप रहे हैं।

पाशुरम 11 में कुलशेखर आल्वार घोषित करते हैं कि ''शुद्ध और पवित्र मन से रचित इन तमिल पाशुरों का गान करनेवाले भक्तों की वेंगडम् के भगवान के दर्शन की इच्छा अवश्य पूरी होगी। भगवान के शत्रुओं और विरोधियों को भगवान अपने चक्र से संहार करते है और भक्तों को आश्वासन देकर अपनाते हैं।''

''पेरुमाल तिरुमोलि'' के अलावा कुलशेखर आल्वार की एक और ख्यात और प्रसिद्ध रचना ''मुकुंदमाला'' है। यह 42 श्लोकों की संस्कृत में रचित भक्ति रसपूर्ण रचना है। ''मुकुन्द'' विष्णु ही हैं। मुकुन्द को महान कहना और उसी रूप में चित्रित करना इस ग्रंथ में था।

परमात्मा एक ही हैं। त्रिमूर्तियों की एकता मान्य है। भगवान के विशिष्ट कार्यों के आधार पर त्रिमूर्तियों की परिकल्पना है - ब्रह्म, विष्णु और शिव। ये सृष्टि, स्थिति और लय की कारक शक्तियाँ हैं। पोयगै आल्वार और पेयाल्वार ने तो श्री वेंकटेश्वर को शिव, विष्णु और ब्रह्म का स्वरूप ही माना है। इसके विपरीत कुलशेखर आल्वार तो ''मुकुन्द'' (विष्णु) को एक मात्र भगवान या परमात्मा मानते हैं। (प्रलयकारक) स्वीकार करते हैं।

यह तो सामान्य ज्ञान है कि परमात्मा सृष्टिकर्ता, स्थितिकारक और लयकारक हैं। मानव, वस्तु समुदाय, क्रियाएँ, घटनाएँ और रहस्यमय विश्व के निर्देशक है। ''श्वेताश्वतर उपनिषद्'' (अ.1 खं. 5 श्लो. 10) कहता है - ''क्षरं प्रधानममृतक्षरं हरः खरात्मना विशते देव एकः'' परमात्मा की प्रकृति और उनके गुण प्रधानम् या प्रकृति (विश्व) क्षरम् है

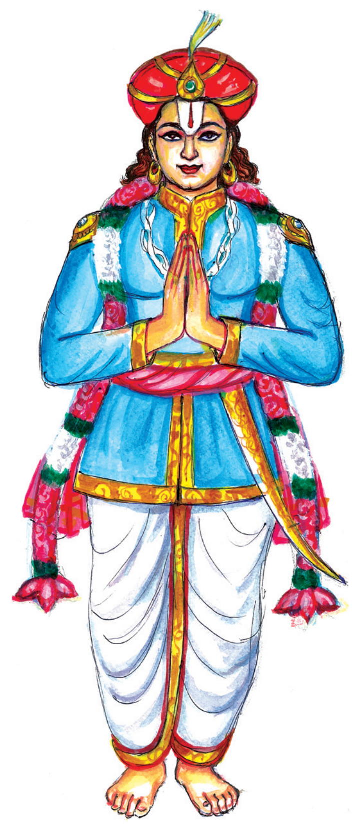

(नाशवान है)। हरः (परमेश्वर या परमात्मा जो प्रलय के समय अपने को और विश्व को बाद में रक्षित करते हैं) एक ही हैं। वे ही एकमात्र देव है। ये ही क्षर - आत्मान, विश्व और आत्मा के सृजक हैं। विश्व और आत्मा, जीव सबके नियोजक भी आप ही हैं।

10वें तिरुवायमोलि के दशक 6 के प्रथम पाशुरम में नम्माल्वार भगवान को ''उलगम् - उण्ड - पेरुवाय'' (प्रलय के समय समस्त को अपने विशाल मुँह से निगलनेवाले) कहते हैं। तिरुमंगैयाल्वार (8 वें तिरुमोलि के प्रथम दशक के तीसरे पाशुरम में) कहते हैं कि परमात्मा आठों दिशाओं और सातों लोकों के रक्षक हैं। पृथ्वी और सागर दोनों की एक साथ रक्षा करनेवाले हैं। उनमें रहनेवाले समस्त जीवों और वस्तुओं के रक्षक हैं। वे समस्त को अपनी कुक्षि (उदर) में रखकर रक्षा करते हैं। प्रलय चाहे कितना भी भयंकर क्यों न हो समस्त के रक्षक परमात्मा ही हैं।

ब्रह्म, विष्णु और शिव नाम तो मात्र व्यापारपरक या क्रियासूचक अभिधान हैं। इनकी निंदात्मक अभिव्यक्तियाँ अस्वीकार्य ही होनी चाहिए। अमान्य ही हैं। ''श्रीलक्ष्मी स्तोत्रम्'' में उन्हें ''ब्रह्म - विष्णु - शिवात्मिका'' कहना ध्यान देने की बात है। एक और पंक्ति में श्रीलक्ष्मी को ब्रह्म, विष्णु और शिव के द्वारा आराधिता भी कहा गया है- ''हरि-हर-ब्रह्मादिभिस्सेविताम्''। इसी प्रकार पार्वती अपने अनेक रूपों में और यहाँ तक सरस्वती भी त्रिमूर्तियों (ब्रह्म, विष्णु और शिव) की आराधिकाएँ कही गयी हैं। ऐसी स्थिति में कौन परमात्मा हैं? सोचने-विचारने की बात है क्या?

तिरुप्पाणाल्वार

तिरुप्पाणाल्वार चोल देश के श्रीरंगम् के पास के उरैयूर के थे। उनका पालन-पोषण एक बहिष्कृत परिवार में हुआ। बचपन से ही उनके हृदय में श्रीरंगनाथ स्वामी की भक्त के बीज पडे थे। उन्होंने स्वामी के प्रति अपने को अर्पित ही कर लिया। ये बाद में लोकसारंग मुनि से प्रेरित होकर श्रीरंगनाथ स्वामी के परिसर में पहुँचाये गये। जबसे उनको रंगनाथ स्वामी का दर्शन हुआ तब से वे पाशुर कहने लगे। उनके मुँह से वे उमड पडे। भगवान को उन्होंने ''अमलनाडिपिरान'' यानी विश्व के पवित्र आदि पुरुष कहा है। इसी शब्द से उन्होंने अपने प्रथम पाशुरम में भगवान को पुकारा है। इसी पाशुरम में उन्होंने श्री वेंकटेश्वर और श्रीरंगनाथ को एक माना है। उनमें अभेद स्वीकार किया है।

अपने प्रथम पाशुरम में ही आल्वार कहते हैं कि भगवान के पदकमल पवित्र हैं। वे ही विश्व के प्रथम कारक हैं। उन्होंने ही अपने को भक्तों के प्रथम सेवक बनाया है। स्वर्ग के देवताओं के देव हैं वे। ये फूलवनों और घने वृक्षों से भरे वेंगडम् पर निवास करते हैं। ऊँचे प्राकारों के बीच विलसित श्रीरंगम् के मंदिर में रहते हैं। इतना ही आल्वार की आँखों में भी बसे हुए हैं। इस से दोनों की भलाई हो रही हैं। दोनों को लाभ मिल रहा है।

तीसरे पाशुरम में वे पुनः श्रीरंगनाथ को वेंगडम् के अधिवासी के रूप में स्वीकार करते हुए कहते हैं कि भगवान खेलने में मस्त बंदरों के बीच रहते हैं। देवताओं से उचित रीति से अर्चित हैं। श्रीरंगम् में शेषशयनी, पीतांबरधारी भगवान हैं। उनका सुंदर नाभि कमल, ब्रह्म का जन्म स्थान, अति आकर्षक लगता है। उन्होंने स्वीकारा कि उनके मन में भक्ति उपजायी। वे ही उनकी आत्मा में भरे हैं।

क्रमशः

हम अक्षय तृतीया को इस साल में बुधवार, 30 अप्रैल को मनाया जाता है। अक्षय तृतीया को अक्ती या तीज के नाम से भी जाना जाता है। यह त्योहार को भारत देश में हिन्दुओं के द्वारा मनाये जाने वाला एक मुख्य पर्व है। अक्षय तृतीया या आखातीज को वैशाख मास में शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि के दिन संपन्न करते है। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार इस दिन जो भी शुभकार्य किए जाते हैं, उनका अक्षय फल मिलता है।

अर्थ

संस्कृत में 'अक्षय' का अर्थ आशा, समृद्धि, आनंद और सफलता होता है और 'तृतीया' का अर्थ तीसरा होता है। हर महीने शुक्ल पक्ष में तृतीया आती है, परन्तु वैशाख के दौरान आनेवाली शुक्ल पक्ष में तृतीया को शुभ माना जाता है।

अक्षय तृतीया का महत्व

अक्षय तृतीया का सर्वसिद्ध मुहूर्त के रूप में भी विशेष महत्व है। मान्यता है कि इस दिन बिना कोई पंचांग देखे कोई भी शुभ व मांगलिक कार्य जैसे विवाह, गृह-प्रवेश, वस्त्र, आभूषणों की खरीददारी या घर, भूखण्ड, वाहन आदि की खरीददारी से संबंधित कार्य किए जा सकते हैं। नवीन वस्त्र, आभूषण आदि धारण करने और नई संस्था या उद्घाटन कार्य श्रेष्ठ माना जाता है। पुराणों में लिखा है कि इस दिन पितरों को किया गया तर्पण तथा पिन्डदान अथवा किसी और प्रकार का दान, अक्षय फल प्रदान करता है। इस दिन गंगा स्नान करने से तथा भगवान पूजन से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। यहाँ तक कि इस दिन किया गया जप, तप, हवन, स्वाध्याय और दान भी अक्षय हो जाता है। यह तिथि यदि सोमवार तथा रोहिणी नक्षत्र के दिन आए तो इस दिन किया गया दान, जप-तप का फल बहुत अधिक बढ जाता है। इसके अतिरिक्त यदि

अक्षय तृतीया

- श्री सी.सुधाकर रेड्डी

यह तृतीया मध्याह्न से पहले शुरू होकर प्रदोषकाल तक रहे तो बहुत ही श्रेष्ठ मानी जाती है।

यह भी माना जाता है कि आज के दिन मनुष्य अपने या स्वजनों द्वारा किए गए जाने-अनजाने अपराधों की सच्चे मन से ईश्वर से क्षमा प्रार्थना करे तो भगवान उनके अपराधों को क्षमा कर देते हैं और उसे सद्गुण प्रदान करते है, अतः आज के दिन अपने दुर्गुणों को भगवान के चरणों में सदा के लिए अर्पित कर उनसे सद्गुणों का वरदान मांगने की परंपरा भी है। हालांकि भगवद्गीता 16 के श्लोक 23-24 में गीता ज्ञान दाता स्पष्ट रूप से निर्देशित करते हुए कहता है कि जो साधक शास्त्र में वर्णित भक्ति की क्रियाओं के अतिरिक्त कोई अन्य साधना व क्रियाएँ करते हैं, उनको न सुख की प्राप्ति होती है, न उनको सिद्धि की

प्राप्ति होती है और नाही उनको मोक्ष की प्राप्ति होती है अर्थात् यह व्यर्थ की पूजा है। साधक को वे सभी क्रियाओं का परित्याग कर देना चाहिए जो गीता तथा वेदों अर्थात् प्रभुदत्त शास्त्रों में वर्णित नहीं है।

हिंदू धर्म में अक्षय तृतीया का महत्व

अक्षय तृतीया के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर समुद्र व गंगा स्नान करके और शांत चिह्न होकर, भगवान विष्णु की विधि-विधान से पूजा करने का प्रावधान है। नैवेद्य में जौ व गेहू का सत्तू, ककडी और चने की दाल अर्पित किया जाता है। तत्पश्चात फल, फूल, पात्र तथा वस्त्र आदि दान करके ब्राह्मणों को दक्षिणा दी जाती है। ब्राह्मण को भोजन करवाना कल्याणकारी समझा जाता है। मान्यता है कि इसे दिन सत्तू अवश्य खाना चाहिए। गौ, भूमि, स्वर्ण पात्र इत्यादि का दान भी इस दिन किया जाता है। स्वर्ण खरीदना व दान देना आम जनता के लिए कष्टदायक हो रहा है। इसलिए आप अपनी शक्ति के अनुसार दान देना ही उचित है।

यह तिथि वसन्त ऋतु के अंत और ग्रीष्म ऋतु का प्रारंभ का दिन भी है इसलिए अक्षय तृतीया के दिन जल से भरे घड़े, कुल्हड, सकोरे, पंखे, खड़ाऊँ, छाता, चावल, नमक, घी, खरबूजा, ककडी, शक्कर, साग, इमली, सत्तू आदि गर्मी में लाभकारी वस्तुओं का दान पुण्यकारी माना गया है। इस दान के पीछे यह लोक विश्वास है कि इस दिन जिन-जिन वस्तुओं का दान किया जाएगा, वे समस्त वस्तुएँ स्वर्ग व अगले जन्म में प्राप्त होगी। इस दिन लक्ष्मीनारायण की पूजा श्वेत कमल अथवा श्वेतपाटल (गुलाब) व पीले पाटल से करनी चाहिए।

''सर्वत्र शुक्ल पुष्पाणि प्रशस्तानि सदार्चने।
दानकाले च सर्वत्र मन्त्र मेत मुदीरयेत।।''

अर्थात् सभी महीनों की तृतीया में श्वेत पुष्प से किया गया पूजन प्रशंसनीय माना गया है।

ऐसे भी मान्यता है कि अक्षय तृतीया पर अपने अच्छे आचरण और सद्गुणों से दूसरे का आशीर्वाद लेना अक्षय

रहता है। भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा विशेष फलदायी मानी गई है। इस दिन किया गया आचरण और सत्कर्म अक्षय रहता है।

भविष्य पुराण के अनुसार इस तिथि को युगादि तिथियों में गणना होती है, सतयुग और त्रेतायुग का प्रारंभ इसी तिथि से हुआ। भगवान विष्णु ने नर-नारायण, हयग्रीव और परशुराम जी का अवतरण भी इसी तिथि को हुआ था। ब्रह्माजी के पुत्र अक्षयकुमार का आविर्भाव भी इसी दिन हुआ था। इस दिन श्री बद्रीनारायण जी की प्रतिमा स्थापित कर पूजा की जाती है और श्री लक्ष्मी नारायण के दर्शन किए जाते हैं। प्रसिद्ध तीर्थस्थल बद्रीनारायण के कपाट भी इसी तिथि से पुनः खुलते हैं। बृन्दावन स्थित श्री बाँके बिहारी जी के मंदिर में भी केवल इसी दिन श्री विग्रह के चरण दर्शन होते हैं, अन्यथा वे पूरे वर्ष वस्त्रों से ढके रहते है। आंध्रप्रदेश में स्थित श्री वराह लक्ष्मीनृसिंहस्वामी मंदिर, सिंहाचलम् क्षेत्र में 'चंदनोत्सव' को इसी दिन आयोजित करते है। इस दिन भगवान जी निजरूप में भक्तों को दर्शन देते हैं। बाकी सभी दिनों में चंदनलेपन में मात्र ही दर्शन देते हैं।

जी.एम.हिगे के अनुसार तृतीया 41 घटी 21 पल होती है तथा धर्मसिन्धु एवं निर्णय सिन्धु के अनुसार अक्षय तृतीया 6 घटी से अधिक होना चाहिए।

पद्म पुराण के अनुसार इस तृतीया को अपराह्न व्यापिनी मानना चाहिए। इसी दिन महाभारत युद्ध का समाप्त हुआ था। और द्वापरयुग का समापन भी इसी दिन हुआ था। ऐसी मान्यता है कि इस दिन से प्रारंभ किए गए कार्य अथवा इस दिन को किए गए दान का कभी भी क्षय नहीं होता।

इस दिन की कुछ अन्य महत्वपूर्ण जानकारियाँ

* माँ अन्नपूर्णा का जन्म इसी दिन हुआ था।
* कुबेर की खजाना मिला था।
* माँ गंगा का धरती पर अवतरण हुआ था।
* सूर्य भगवान ने पांडवों को अक्षय पात्र दिया।
* वेदव्यास जी ने महाकाव्य महाभारत की रचना गणेशजी के साथ शुरू किया था।
* प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ ऋषभदेवजी भगवान के 13 महीने का कठिन उपवास का पारणा इक्षु (गन्ने) के रस से किया था।
* जगन्नाथ भगवान के सभी रथों को बनाना प्रारंभ किया था।
* आदिशंकराचार्य ने कनकधारा स्तोत्र की रचना की थी।
* आज के दिन से उत्तराखंड के चार धाम यात्रा शुरू होती है। चार धाम है- यमुनोत्री, गंगोत्री, बदरीनाथ और केदारनाथ।

प्रचलित कथाएँ

अक्षय तृतीया की अनेक व्रत कथाएँ प्रचलित है। ऐसी ही एक कथा के अनुसार प्राचीनकाल में धर्मदास नाम के एक वैश्य था। उसकी सदाचार, देव और ब्राह्मणों के प्रति श्रद्धा थी। इस व्रत के माहात्म्य को सुनने के बाद उसने इस पर्व के आने पर गंगा में स्नान करके विधिपूर्वक देवी-देवताओं की पूजा की। व्रत के दिन स्वर्ण, वस्त्र तथा दिव्य वस्तुएँ ब्राह्मणों को दान में दी। अनेक रोगों से ग्रस्त तथा वृद्ध होने पर भी उसने उपवास करके धर्म-कर्म और दान-पुण्य किया।

यही वैश्य दूसरे जन्म में कुशावती का राजा बना कहते है कि अक्षय तृतीया के दिन किए गए दान व पूजन के कारण वह बहुत धनी प्रतापी बना। वह इतना धनी और प्रतापी राजा था कि त्रिदेव तक उसकी सभा में अक्षय तृतीया के दिन ब्राह्मण वेषधारण करके उसके महायज्ञ में सम्मिलित होते थे। अपनी श्रद्धा और भक्ति का उसे कभी घमण्ड नहीं हुआ और महान वैभवशाली होने पर भी वह धर्म मार्ग से विचलित नही हुआ। यही राजा आगे चलकर राजा चन्द्रगुप्त के रूप में जन्म हुआ।

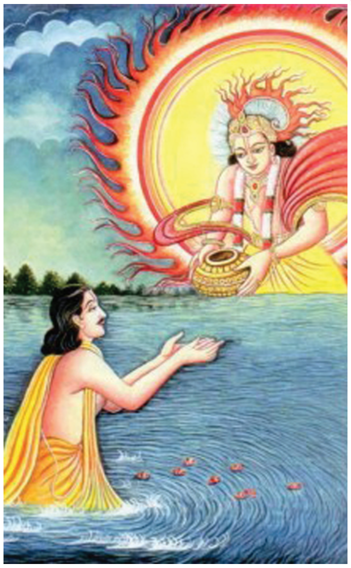

स्कंद पुराण और भविष्य पुराण में उल्लेख है कि वैशाख शुक्ल पक्ष की तृतीया को रेणुका के गर्भ से भगवान विष्णु ने परशुराम के रूप में जन्म लिया। कोंकण और चिप्लन के परशुराम मंदिरों में इस तिथि को परशुराम जयंती बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है। दक्षिण भारत में परशुराम जयंती को विशेष महत्व दिया जाता है। परशुराम जयन्ती होने के कारण इस तिथि में भगवान परशुराम के आविर्भाव की कथा भी सुनी जाती है। इस दिन परशुराम की पूजा करके उन्हें अर्घ्य देने का बड़ा माहात्म्य माना गया है।

अक्षय तृतीया पर स्त्रियों का आचरण

सौभाग्यवती स्त्रियाँ और क्वारी कन्याएँ इस दिन गौरी

पूजा करके मिठाई, फल और भीगे हुए चने बांटती है। गौरी-पार्वती की पूजा करके धातु या मिट्टी के कलश में जल, फल, फूल, तिल, अन्न आदि लेकर दान करती है। मान्यता है कि इसी दिन जन्म से ब्राह्मण और कर्म से क्षत्रिय भृगुवंशी परशुराम का जन्म हुआ था।

एक कथा के अनुसार परशुराम की माता और विश्वामित्र की माता के पूजन के उपरान्त प्रसाद देते समय ऋषि ने प्रसाद परिवर्तित कर दे दिया था। जिसके प्रभाव से परशुराम ब्राह्मण होते हुए भी क्षत्रिय स्वभाव के थे और क्षत्रिय पुत्र होने पर भी विश्वामित्र ब्रह्मर्षि कहलाए। उल्लेख है कि परशुरामजी अपना धनुष बाण श्रीराम को समर्पित कर संन्यासी का जीवन बिताने अन्यत्र चले गए। अपने साथ एक परशु रखते थे तभी उनका नाम 'परशुराम' पड़ा।

विभिन्न प्रांतों में अक्षय तृतीया का आयोजन

बुन्देलखण्ड में अक्षय तृतीया से प्रारंभ होकर पूर्णिमा तक बड़ी धूमधाम से उत्सव मनाया जाता है, जिसमें कुँवारी कन्याएँ अपने भाई, पिता तथा गाँव-घर और कुटुम्ब के लोगों को शगुन बॉटती हैं और गीत गाती हैं। अक्षय तृतीया को राजस्थान में वर्षों के लिए शगुन निकाला जाता है, वर्षा की कामना की जाती है। लड़कियाँ झुण्ड बनाकर घर-घर जाकर शगुन गीत गाती हैं और लडके पतंग उडाते हैं। यहाँ इस दिन सात तरह के अन्नों से पूजा की जाती है। मालवा में नए घड़े के ऊपर खरबूजा और आम के पल्लव रखकर पूजा की जाती है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन कृषि कार्य के आरंभ किसानों को समृद्धि देता है।

अक्षय तृतीया पर किया गया दान पुण्य और शुभ कार्य जन्मांतर तक मिलता है। इस दिन भगवान विष्णु और उनके अवतारों की पूजा विशेष रूप से फलदायी मानी गई है। इस दिन नमक और जल से भरे हुए घडे का दान करना बड़ा ही शुभ माना गया है।

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

रामकथा सुंदर करतारी

- डॉ.विजयप्रकाश त्रिपाठी

जनसामान्य में श्रीराम कथा को लोकप्रिय बनाने में वाल्मीकि कृति 'आदि रामायण' का बड़ा रोचक और व्यापक प्रभाव रहा है। भगवान विष्णु के रूप में श्रीराम की प्रतिष्ठा होने के पश्चात् परवर्ती पुराण-उपपुराणों में मुख्यतः पद्म-पुराण, स्कन्द-पुराण और भागवत-पुराण आदि में रामकथा विषयक सामग्री उत्तरोत्तर विकास करने लगी। स्वतंत्र रूप से भी रामकथा की अनेक काव्य-कृतियों एवं साम्प्रदायिक रामायणों की रचना होने लगी है। इस तरह की रामकथा विषयक संस्कृत-साहित्य से 'अध्यात्म-रामायण', 'अद्‌भुत-रामायण' और 'आनन्द-रामायण' विशेष रूप से पठनीय व प्रचलित हैं।

सम्पूर्ण भारत में और निकटवर्ती देशों में प्रचलित रामकथा का स्वरूप का स्वरूप भिन्न-भिन्न है। मुख्य रूप से बौद्ध एवं जैन साहित्य में प्रचलित रामकथा का रूप 'आदि-रामायण' की मूल कथ्य से परे हैं। परन्तु मूल कथा में परिवर्तन या परिवर्धन बौद्ध या जैन साहित्य की ही विशेषतः नहीं है, ललित साहित्य व धार्मिक संस्कृत साहित्य में वर्णित रामकथा की तुलना करने पर भी यह प्रतीत होता है कि जैसे-जैसे रामकथा का प्रचार और प्रसार होता रहा, उसमें प्रसंग के अनुसार देशकाल स्थिति को जोड़ा गया। तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में लिखा है - ''रामायण सत् कोटि अपारा।'' रामकथा विषयक जिन साम्प्रदायिक काव्य कृतियों का प्रसार हुआ है, उनमें 'अद्‌भुत-रामायण' का अपना एक विशिष्ट स्थान है।

'अद्‌भुत रामायण' 1353 श्लोकों एवं 27 सर्गों में विभाजित है। यह कृति वाल्मीकि-भरद्वाज सम्वाद के रूप में प्रस्तुत की गई है। इस कृति में सीता के अद्‌भुत रूप पराक्रम का वर्णन है। महाविकट रूप धारण करके शक्ति-स्वरूपा सीता जी सहस्रवदन रावण का वध करती है। तब श्रीराम जी 'सहस्रनाम' से सीता की वन्दना कर उन्हें शान्त करते हैं।

'अद्‌भुत-रामायण' की कथावस्तु का तीसरा व 18 से 27 वें सर्ग का कथानक बड़ा रोचक है। किंवदन्ती है कि महर्षि वाल्मीकि ने अपने चौबीस सहस्र रामायणों में जहाँ पुरुष की प्रधानता बतायी है वहीं अद्‌भुत रामायण में प्रकृति

का प्रभाव वर्णित किया गया है। प्रकृति व पुरुष के रूप में राम-सीता ही असुरों का संहार करते हैं उस तथ्य का प्रतिपादन ही कवि का आशय है। यथार्थ में यह सम्पूर्ण कथा आध्यात्मक ही है। यहाँ राम-ब्रह्म तथा सीता-शक्ति की प्रतीक है। अतएव सीताजी का माहात्म्य श्रीराम की ही माहात्म्य है।

रावण-वध के उपरान्त जब राम अयोध्या के राज्य को स्वीकार कर राजा बन जाते हैं, तब अनेक ऋषि, मुनि आदि उनके पराक्रम का गान करते हैं। यह सुनकर सीताजी हँसने लगती हैं। तब आश्चर्य विभोर होकर ऋषिगण उनसे हँसने का कारण पूछते हैं। तब सीताजी

कहती हैं - ''जब मैं छोटी थी उस समय मिथिला में एक ब्राह्मण देव चार मास व्यतीत करने के लिए राज्य में ठहरे थे। मैं ने उस ब्राह्मण देव की बड़ी सेवा सुश्रुषा की थी। उस सेवा के बदले में उन ब्राह्मण देव ने यह वृत्तान्त मुझे सुनाया था।''

''विश्रवा मुनि की पत्नी कैकसी के दो पुत्र थे। दोनों का नाम रावण था। बड़े पुत्र का नाम सहस्रवदन रावण और छोटे पुत्र का नाम दशबदन रावण था। सहस्रबदन रावण पुष्कर द्वीप में निवास करता था। वह इन्द्र सहित देवताओं, गन्धर्वों व विद्वानों आदि को बालक्रीडा के समान धराशायी कर देता था। वह मेरु पर्वत को सरसों के समान, समुद्र को गोष्पद के समान तथा सारे लोक को तृण के समान मानता था। बड़े-बड़े शूरवीरों की उसके समक्ष कोई गणना ही नहीं थी। छोटा भाई दशबदन लंका में निवास करता था।

इस दो रावणों में से मात्र छोटे का बध किया गया है। इसमें मुझे कोई आश्चर्य नहीं लगता। यदि सहस्रबदन का वध हो जाय तो सारा जगत् सुखी हो सकता है।''

यह सुनते ही राम, शोक और भय को छोड़कर सहस्रनाम से सीता की स्तुति करते हैं - ''तुम्हारा रूप सब कला से विहीन, अगोचर, निर्मल, एकरूप है। आदि-अन्त, मध्यरहित अनन्त तमस से परे, सबकी आदि मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ। हे देवी! तुम राजाओं में ईशता, युगों में सतयुग, अर्चिरादि सब भागों में आदित्य, वाणी में सरस्वती, सुन्दर रूप में लक्ष्मी, मायावियों में विष्णु, पक्षियों में गरुड़ एवं सतियों में अरुन्धती हो। सबके सब जगत के निधान, सब स्थान में जाने वालें, जन्म-विनाश से रहित, अणु, प्रभेद, आद्य महनीय पुरुष-अनुरूप तुम्हारे स्वरूप को मैं प्रणाम करता हूँ।''

रावण-वध के समस्त प्रसंग में तथा ब्रह्म एवं राम द्वारा की गई सीता की स्तुति में शाक्त सम्प्रदाय का प्रभाव पूर्णतया लक्षित प्रतीत होता है। 'श्रीरामचरितमानस', 'आनन्द रामायण' आदि रामकथा विषयक काव्य-ग्रन्थों में शैव सम्प्रदाय एवं कृष्ण भक्ति वैष्णव सम्प्रदाय का भाव दृष्टब्य होता है। 'अद्भुत रामायण' वास्तव में एक ऐसी उपयोगी, लोकप्रिय कृति है, जिसमें शाक्त सम्प्रदाय के प्रभाव से रामकथा को एक विशिष्ट आयामी दृष्टिकोण से देखने का प्रयत्न किया गया है। महारानी सीता के माहात्म्य का प्रतिपादन करके पुरुष प्रकृति में भेद ही नहीं रखा गया है। इसी बात के निरूपण से यह कृति समाज में प्रभावशाली बन गयी है।

ओंटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर

आंध्रप्रदेश, कडपा जिला, ओंटिमिट्टा प्रांत में विराजित श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर बहुत प्राचीन श्रीराम मंदिर है। इस प्रांत को 'एकशिलानगर' भी कहते हैं। इस मंदिर का निर्माण जांबवंत ने किया। इस आलय से संबंधित दर्शन एवं सेवा का विवरण निम्नांकित हैं।

मंदिर का दर्शन समय

प्रातः 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक भगवान जी को दर्शन कर सकते है।

प्रातः 5.00 बजे से सुबह 7.30 बजे तक दर्शन

सुबह 7.30 बजे से सुबह 8.15 बजे तक प्रथम घण्टानाद

सुबह 8.15 बजे से सुबह 10.30 बजे तक दर्शन

सुबह 10.30 बजे से सुबह 11.15 बजे तक द्वितीय घण्टानाद

सुबह 11.15 बजे से सायं 5.30 बजे तक दर्शन

सायं 5.30 बजे से सायं 6.15 बजे तक तृतीय घण्टानाद

सायं 6.15 बजे से रात 8.45 बजे तक दर्शन

रात 8.45 बजे से रात 9.00 बजे तक एकांतसेवा

भगवान जी का सेवा टिकट विवरण

1) कल्याणोत्सव - रु.1,000/- दो व्यक्ति के लिए, समय सुबह-9.00 बजे को

2) अभिषेक - रु.150/- दो व्यक्ति के लिए, हर शनिवार, समय सुबह-6.00 बजे को

3) स्वर्ण पुष्पार्चन - रु.250/- एक व्यक्ति के लिए, हर रविवार, समय सुबह-8.30 बजे को

सूचना

मंदिर के प्रांगण में स्थित काउण्टरों में (या) ऑनलाइन के माध्यम से भी टिकट प्राप्त कर सकते है। कृपया भेंट हुण्डी में ही डालें।

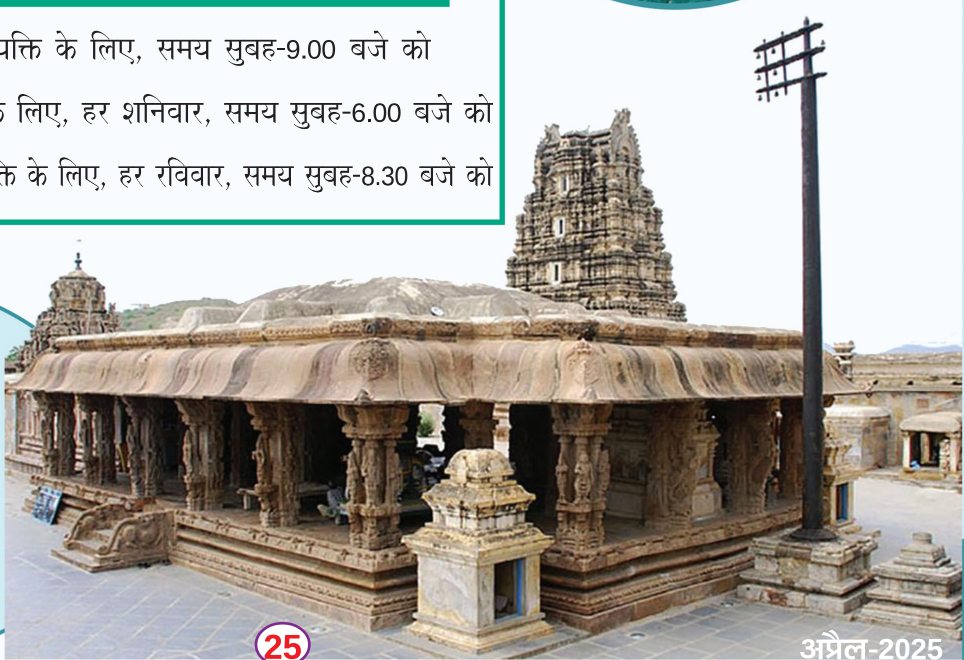

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

मरुळ्शुरन्दु आगमवादियर् कूरुम्, अवप्पोरुळाम्

इरुल् शुरन्देय्त्त वुलहिरुळ् नींग, तन्नीण्डिय शीर्

अरुळ् शुरन्देल्ला वुयिर्हट्कुम् नाथन् अरंगनेन्नुम्

पोरुळ् शुरन्दान्, एम्मिरामानुजन् मिक्क पुण्णियने ॥९१॥

विवेकान्धैः शैवागमनिष्ठैः कौतस्कुतैः प्रतिपाद्यमानेन शिवपारम्यरूपेण असदर्थेन सान्द्रतमस्के भूमण्डलेऽवतीर्य स्वकीयविलक्षणपरमकृपया सर्वजगत्स्वामी श्रीरंगनाथो भगवानेवेति परमार्थं प्रकाश्य तमो निरस्त वान् भगवान् रामानुजः परमधार्मिकः॥

विवेकशून्य शुष्कतर्कानुसारी शैवागमियों से प्रतिपादित शिवपारम्यरूप अपार्थ से मोहित अज्ञानसमावृत इस भूमंडल में अवतार लेकर, इस परमार्थ को प्रकाशित करते हुए कि ''भगवान श्रीरंगनाथ ही सकल जगत के स्वामी हैं'', अज्ञान मिटानेवाले परमदयालु श्री रामानुजस्वामीजी परमधार्मिक हैं।

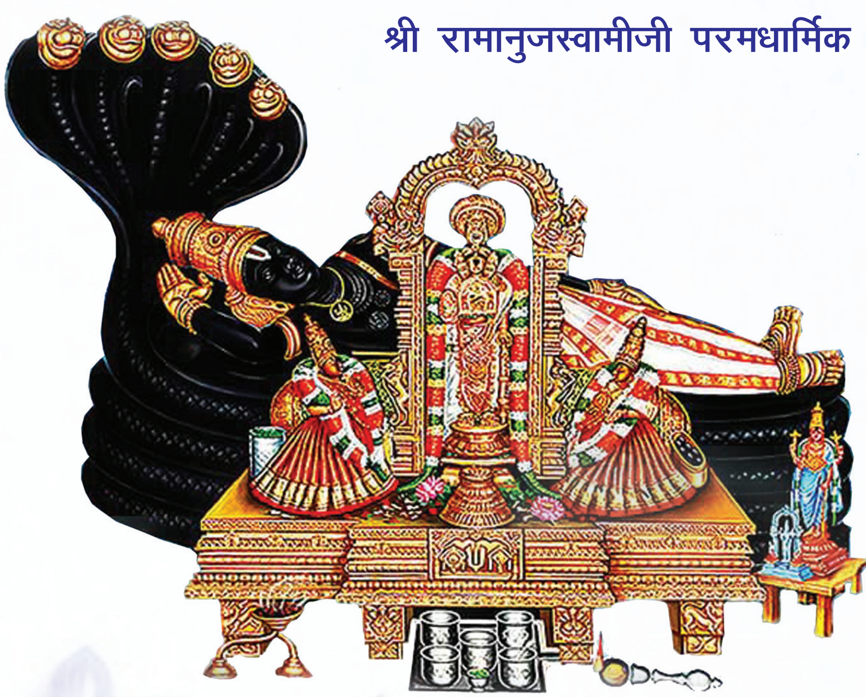

''श्रीरंगनाथ भगवान ही सकल जगत के स्वामी हैं'', श्रीरामानुज स्वामीजी ने इस परमार्थ को प्रकाशित किया।

क्रमशः

महाकुंभमेला में ति.ति.दे. का नमून मंदिर

माघ मास में आयोजित की गई 'महान कुंभमेला' दुनिया का सबसे बड़ा आध्यात्मिक संगम पर्व है। इस कुंभमेला में नागसाधु, संतों ने भाग लेते है। इस क्षेत्र में शिविरों की स्थापना कर और जुलूस को बनाकर एक मेला की तरह यह प्रांत का दृश्य दिखता है। देश-विदेश के साथ-साथ गाँव, शहरों से भी अधिक संख्या में जनसमूह भाग लिया। यह पर्व को हर कोई बिना किसी अंतर के साथ मनाता है। कुंभ का अर्थ है घडा। इस को कलश भी कहा जाता है। 12 साल को एक बार ग्रहों का गतिविधियों के अनुसार नदियों को पुष्कर कार्यक्रम संपन्न करते है।

देवताओं को शक्तिशाली बनने के लिए अमृत के लिए क्षीरसागर को छिड़कने के लिए तैयार किया जाता है। देवताओं और राक्षसों के बीच में अमृत को आधा भाग बनाने के लिए समझौते के साथ मंथर पर्वत को मक्कारी के रूप में, सर्पराज वासुकि मक्कार का रस्सी के रूप में, क्षीरसागर को मंथन के लिए तैयार हो जाते है। उनका प्रयत्न सफलीकृत बन जाता है। अमृत कलश प्राप्त होते है। फिर दोनों के बीच मुकाबला शुरू हो जाता है। तब जब भगवान विष्णु इस अमृत कुंभ को ले जा रहे थे, तब अमृत कुंभ से कुछ बूंदें उज्जैन, हरिद्वार, नासिक, प्रयाग की नदियों में गिर गई। तभी से इस मेले को कुम्भमेले के नाम से जाना जाता है। यह कहानी रामायण, भारतम, भागवत में दिखाति है।

यह समारोह सूर्य और बृहस्पति ग्रहों की स्थिति के आधार पर किया जाता है। जब सूर्य, बृहस्पति दोनों की सिंहराशि में होता है तो कुंभमेला नासिक के त्रयंबकेश्वर में आयोजित किया जाता है। कुंभमेला हरिद्वार में तब आयोजित होता है जब सूर्य-मेष राशि में होता है और बृहस्पति-वृषभ राशि में होता है, प्रयाग में जब सूर्य-मकर राशि में होता है और उज्जैन में जब बृहस्पति-सूर्य वृश्चिक राशि में होता है। आमतौर पर कुंभमेला हर चार साल में एक बार आयोजित किया जाता है और अर्थकुंभमेला हर छह साल में हरिद्वार और प्रयाग में आयोजित किया जाता है। पूर्णकुंभमेला 12 वर्षों में एक बार प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में आयोजित किया जाता है। 12 पूर्णकुंभमेलों के समापन के बाद यानी एक सौ चवालीस(144) वर्षों को एक बार प्रयागराज, इलाहाबाद में त्रिवेणी संगम पर महाकुंभमेला को आयोजित किया जाता है। यह माघपूर्णिमा यानी 13 जनवरी से शुरू होता है और लगातार 45 दिनों तक मनाया जाता है और 26 फरवरी को महाशिवरात्रि पर्व से समाप्त होता है। इन 45 दिनों के दौरान न केवल दुनिया भर से बल्कि हमारे देश के विभिन्न हिस्सों से भी लोग बड़ी संख्या में आते हैं और प्रयाग में त्रिवेणी संगम पर पवित्र स्नान करते हैं

और स्वास्थ्य और शक्ति प्राप्त करते हैं। ऐसा कहा जाता है कि इस वर्ष (2025) के महाकुंभमेले में लगभग 60 करोड़ लोगों ने पवित्र स्नान किया। यह भी माना जाता है कि यहाँ पितृ देवताओं को तर्पण करने से पूर्वज पवित्र लोकों में पहुँच जाते हैं।

महाकुंभमेले के 45 दिनों के लिए तिरुमल तिरुपति देवस्थान के मंदिर प्रशासकों ने प्रयागराज में बालाजी का एक नमूना मंदिर को स्थापित किया है। इस नमूना मंदिर में भगवान जी का नित्य-अर्चना, कैंकर्य, कल्याणोत्सव का वेभवोपेत ढंग से संपन्न किया गया था। ये उत्सव कार्यक्रम को एस.वी.बी.सी. भक्ति चैनल के माध्यम से देखने का अवसर दिया गया है। इस महाकुंभमेला में कहीं से भी भक्त पवित्र स्नान की तीर्थयात्रा के लिए झुंड में आये और कलियुग के प्रत्यक्ष देवता श्री वेंकटेश्वर स्वामी का दर्शन उपलब्ध कराकर पुनीत बन गया। सरकार ने कुंभमेला, अर्थकुंभमेला, पूर्णकुंभमेला और महाकुंभमेला में आने वाले तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए यात्रा और चिकित्सा सुविधाओं की व्यवस्था की है। श्रद्धालुओं को खाने-पीने को लेकर ऐसी दिक्कतों का सामना न करना पड़े, इसके लिए कदम उठाए गए हैं।

तेलुगु मूल - डॉ.एम.ललितकुमारी

दि. 08-01-2025 को तिरुमल से उत्तरप्रदेश, प्रयागराज, महाकुंभमेला के जाने वाले ति.ति.दे. के कल्याणरथ वाहन को झंडा लहराओं करते हुए ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष और अतिरिक्त ई.ओ.। और साथ-साथ दि. 12-01-2025 को उत्तरप्रदेश, प्रयागराज प्रांत में महाकुंभमेला के संदर्भ में ति.ति.दे. के द्वारा नमूना मंदिर को बनवाकर प्रारंभोत्सव किया। इस विशेष संदर्भ में विश्वक्सेन पूजा, पुण्यहवचन और आदि वैदिक आचार को संपन्न करने के बाद भगवानजी भक्तों को दर्शन दिया था।

दि. 03-02-2025 को उत्तरप्रदेश, महाकुंभमेला में ति.ति.दे. का नमूना मंदिर में वसंत पंचमी के अवसर पर उत्सवमूर्ति को श्री सरस्वती देवी अलंकरण में भक्तों को दर्शन दिया। और साथ-साथ दि. 16-01-2025 को ति.ति.दे. का नमूना मंदिर में भगवानजी को स्नपन तिरुमंजन कार्यक्रम को अत्यंत वैभव से संपन्न किया।

दि. 18-01-2025 को उत्तरप्रदेश, प्रयागराज, महाकुंभमेला में ति.ति.दे. का नमूना मंदिर में श्री श्रीनिवास कल्याणोत्सव के संदर्भ में विश्वक्सेन आराधना, पुण्यहवचन, अग्नि प्रतिष्ठा, महासंकल्प, मंगलसूत्र धारण आदि वैदिक कार्यक्रम को अत्यंत सुमनोहर रूप से संपन्न किया।

मिथ की महिला चरित

वकुला माता

- डॉ.के.एम.भवानी

वकुला माता कलियुग के भगवान श्री वेंकटेश्वर की माता है। तिरुमल पर स्थित बालाजी मंदिर में माता अपना पुत्र श्रीनिवास की पाकशाला(रसोई घर) का पर्यवेक्षण करके, पुत्र के भोजन का प्रबंध जाँच करती रहती है। कलियुग वैकुंठ तिरुमल क्षेत्र में बालाजी मंदिर में मूलमूर्ति मंदिर के बगल में ही वकुला माता की मूर्ति स्थित है।

द्वापरयुग में भगवान विष्णु जब श्रीकृष्ण का अवतार लिया था, तब माता यशोदा उसकी पोषित जननी है। भगवान विष्णु माता देवकी के गर्भ से जनम लेने पर भी कृष्ण यशोदा-नंदन बनकर ही बचपन बिताया। ब्रज भूमि में माता यशोदा को बाल लीलाएँ दिखाकर उन्हें खुशी में डुबा दिया। किसी भी अवतार में भगवान विष्णु इतनी लीलाएँ नहीं दिखाया, जितनी वह कृष्णावतार में दिखाया। माता यशोदा कृष्ण की बाल लीलाओं से मुग्ध हो गई।

बड़े होने के बाद कृष्ण गोकुल छोड़कर मधुरा पहुँचता है। समय-समय पर श्रीकृष्ण माता लक्ष्मी का अवतार रुक्मिणी के साथ-साथ और सात कन्याओं से शादियाँ कर लेता है। जब बहुत समय के बाद कृष्ण माता यशोदा से मिलने गोकुल जाता है, तब यशोदा यह कहकर दुखित होती है कि कृष्णा! मेरे लाल! तुम अपनी बाल लीलाओं से मुझे मुग्ध करके मेरा जीवन धन्य कर दिया। एक नहीं, दो नहीं, तुमने आठ शादियाँ कर ली। लेकिन मैं तुम्हारी एक भी शादी अपनी आँखों से देख नहीं पाई। क्यों? कान्हा! मैं इतनी भाग्यशाली नहीं हूँ क्या?

ममता भरी माता यशोदा की चाह को पूरा करने के लिए कृष्ण उसे वचन देता है कि माता! कलियुग में श्रीनिवास बनकर अवतार लूँगा। तब तुम माता वकुला बनकर आएगी। तब तुम मेरी शादी देखना ही नहीं, तुम खुद मेरी शादी करोगी। मेरी शादी तुम्हारी हाथों से ही होगी।

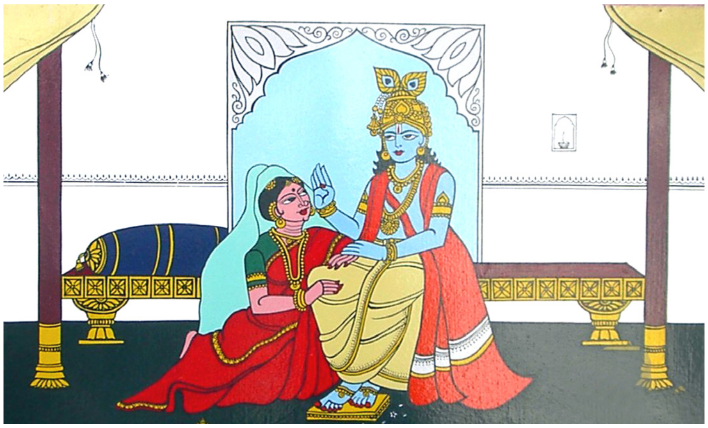

कलियुग में जब माता लक्ष्मी गुस्से से वैकुंठ को छोड़कर भूलोक पहुँचती है, तब उसको ढूँढते हुए श्रीहरि श्रीनिवास नाम से वेंकटाचलम पहुँचता है, तब उसकी मुलाकात वकुला माता से होती है, जो भगवान की भक्ति में लीन होकर श्रीनिवास की इंतजार करती हुई जिंदगी बिता रही है। महाविष्णु श्रीनिवास के नाम से उसका पुत्र बनकर रहने लगता है।

एक दिन श्रीनिवास की मुलाकात आकाशराज की पुत्री पद्मावती से होती है, तो वह इस बात को माता वकुला को बताता है और कहता है कि श्रीनिवास से पद्मावती की शादी के बारे में वकुला माता जाकर आकाशराज से बात करें।

पुत्र श्रीनिवास की इच्छा को पूरा करने के लिए वकुला माता आकाशराज के पास जाकर श्रीनिवास के लिए पद्मावती का हाथ माँगती है। पहले वह आकाशराज की पत्नी धरणी देवी से मिलती है। श्रीनिवास की इच्छा बताती है। उसकी बात से सहमत होते हुए आकाशराज और धरणी देवी शादी को मान लेते हैं।

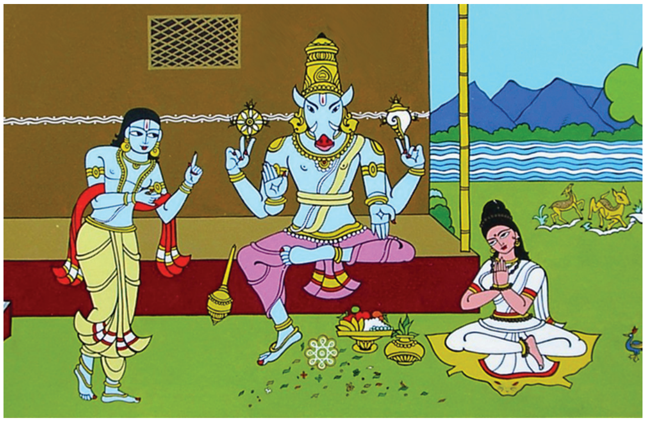

श्री विलंबी नाम साल वैशाख मास के शुक्ल पक्ष दशमी शुक्रवार के दिन वकुला माता के पर्यवेक्षण में श्रीनिवास और पद्मावती की शादी धूम-धाम से हो जाती है। इस प्रकार द्वापरयुग में भगवान विष्णु माता यशोदा को दिया वचन को वेंकटेश्वर बनकर निभाया। वकुला माता श्रीनिवास और पद्मावती की शादी करके अपना जन्म धन्य बनाई।

वकुला माता का मंदिर :

आंध्रप्रदेश, तिरुपति जिले के पेरूरु मंडल में वकुला माता का मंदिर है। ऐतिहासिक सबूतों के अनुसार माना जाता है कि चार सौ सालों के पहले विजयनगर के राजाओं ने इस मंदिर का निर्माण कराया। तिरुमल तिरुपति देवस्थानम के पर्यवेक्षण में यह मंदिर आजकल भक्तों के दर्शन योग्य बनकर प्रसिद्ध हो गई है।

❀❀❀

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, देव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक ध्रुवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र).

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

73) तिरु द्वारका - (तुवरै - तुवरापति) (गुजरात राज्य)

यह दिव्य क्षेत्र - मुंबई अहमदाबाद - जामनगर-ओखा बंदरगाह जाने के रेल मार्ग में - ओखा से 32 कि.मी. पर द्वारका रेल स्टेशन है। बस की सुविधा भी है। स्टेशन से मंदिर 3 कि.मी. पर है। ओखा बंदरगाह के पास बेट द्वारका है।

मूलमूर्ति - कल्याण नारायणन, द्वारकानाथजी, पश्चिमाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - कल्याण नाच्चियार (लक्ष्मीश्री) रुक्मिणी आदि अष्ट महिषि।

तीर्थ - गोमती नदी, समुद्र संगम्।

विमान - हेम कूट विमान।

प्रत्यक्ष - द्रौपती।

यह दिव्य क्षेत्र सात मुक्ति प्रदायक क्षेत्रों में एक है। बताया जाता है कि इस मंदिर का निर्माण 5000 वर्ष पूर्व हुआ। समय-समय पर जीर्णोद्धार हुआ है। स्थानीय लोग इस पर अपना आनन्द प्रकट करते है कि 1982 पाकिस्तान के साथ युद्ध के समय यहाँ बम गिरा था।

उससे मंदिर को कोई हानि नहीं हुई। समुद्र के किनारे होने पर भी समय-समय पर होनेवाली आँधी से भी मंदिर का कोई नुक्शान नहीं होता है। यह ऐतिह्य है कि श्रीकृष्ण ने इस नगर के स्थापन का यह मोक्ष का द्वारा होने से द्वारका कहा जाता है। मंदिर से कुछ सीढियाँ नीचे जाने पर गोमती नदी का समुद्र से संगम क्षेत्र है। बस से ओखा बंदरगाह जाकर वहाँ से बोटे से बेट द्वारका जा सकते हैं।

यह एक छोटा द्वीप है। रास्ते में 4 कि.मी. पर रुक्मिणी का मंदिर है। यह ऐतिह्य कि श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी से यहीं विवाह किया। बेट द्वारका में ही कृष्ण का राज महल है।

यहाँ की मूलमूर्ति भगवान शंख-चक्रधारी हैं। तीन मील पर शंख तीर्थ है। यहाँ श्रीकृष्ण (कल्याणरायर्) रुक्मिणी आदि आठ महिषियों की मूर्तियों को दर्शन कर सकते हैं। वापसी में विरावल स्टेशन से प्रभास तीर्थ जा सकते हैं। यहीं पर संगमरमर से निर्मित सोमनाथ मंदिर है। पालका नामक स्थान में कृष्ण का

मंदिर है। पालका में ही वैकुंठ जाने के पूर्व - पीपल पेड के नीचे शयनित - श्रीकृष्ण भगवान के दर्शन कर सकते है यहाँ पंच द्वारका प्रसिद्ध है। 1. गोमती द्वारका, 2. बेट द्वारका, 3. कल्याण द्वारका, 4. मूल द्वारका, 5. मुक्ति द्वरका।

मंगलाशासन - 5 आल्वार, कुल 13 दिव्य पद।

द्वारका मंदिर के पास द्वारका पीठ, शारदा मठ, शंकर मठ है। यहाँ के मंदिर में लक्ष्मी आदि के दर्शन कर सकते हैं।

74) अहोबिलम (तिरु सिंगवेल कुण्ड्रम)

चेन्नै बंबई रेल मार्ग में कडप्पा स्टेशन से अल्लगड्डा है (बस मार्ग - 85 कि.मी.) अल्लगड्डा से (बस मार्ग) अहोबिलम 25 कि.मी. है। सभी स्थानों से बस की सुविधा है। यह नव नरसिंह क्षेत्र हैं। यहाँ नव नरसिंह विराजमान हैं।

ज्वालाअहोबिल मालोला क्रोधा कारंज भार्गव।
योगानन्दक्षात्रवट पावन नव मूर्तयः नमो नमः।।

1. अहोबिल नरसिंह,
2. वराह नरसिंह,
3. मालोल नरसिंह,
4. योगानन्द नरसिंह,

5. पावन नरसिंह, 6. कारञ्ज नरसिंह,
7. छत्रवट नरसिंह, 8. भार्गव नरसिंह,
9. ज्वाला नरसिंह।

पहाडी के ऊपर प्रह्लाद नरसिंह, उग्र नरसिंह सन्निधियाँ भी हैं। यह मंदिर अहोबिल मठ का केन्द्र स्थान है। वर्षभर में कई उत्सव मनाए जाते हैं। कील अहोबिलम में प्रह्लाद नरसिंह मंदिर हैं।

प्रह्लाद नरसिंह मंदिर (कील अहोबिलम्)

मूलमूर्ति - प्रह्लाद वरदान। लक्ष्मी नरसिंहन पूर्वाभिमुखी आसीनस्थ मुद्रा में दर्शन देते हैं।

उत्सव मूर्ति - मालोल नरसिंहन के अलावा बाली आदि नरसिंह उत्सवविग्रह यहाँ विराजमान है। स्वाती नक्षत्र के दिन दर्शन कर सकते हैं। मालोल नरसिंह - अहोबिल मठ के जीयर - अळहिय सिंगर के तिरुवाराधन में है।

तायार (माताजी) - अमृतवल्लि - चेंचुलक्ष्मी।

तीर्थ - इन्द्र, नृसिंह, पापनाशिनी, गज, भार्गव तीर्थ।

विमान - गुहा विमान।

प्रत्यक्ष - अहोबिल मठ के प्रप्रथम जीयर को योगी रूप में दर्शन दिया।

पहाड पर - मेल नरसिंह - अहोबिल नरसिंह यह एक गुहा मंदिर (सन्निधि) है।

मूलमूर्ति - अहोबिल नरसिंह।

तायार (माताजी) - लक्ष्मी।

तीर्थ - भवनाशिनी।

विमान - गुहा विमान।

प्रत्यक्ष - भक्त प्रह्लाद।

पुराणों के विवरण के अनुसार - यहाँ की मूर्ति स्वयंभू मूर्ति है। नरसिंह भगवान ने शिकारी वेष में आकर चेंचुलक्ष्मी से विवाह कर लिया था।

पहाड का नाम गरुडाद्रि, गरुडाचल है। मेल अहोबिलम सन्निधि से भवनाशिनी धारा के किनारे पहाड पर भक्त पैदलयात्रा में जाते है। पहले वराह नरसिंह के दर्शन कर, आगे - (मेल अहोबिल से लगभग 3 कि.मी.) एक 5 खडी ढाल (चट्टान) पर एक सन्निधि में मालोल नरसिंह के दर्शन कर सकते है। यहाँ से 4 कि.मी. पर एक खंभा है - जिससे यह ऐतिह्य है कि यहीं पर श्री नरसिंह भगवान प्रकट हुए। आगे ज्वाला नरसिंह - कठिन पहाडी मार्ग से होकर जाना है। भक्त लोग बृंद बनाकर जाते हैं। इसी स्थान पर अहोबिल मठ के

प्रप्रथम जीयर स्वामी ने अहोबिल पर्वत पर विराजमान नरसिंह के दर्शन किये। भगवान ने उनको संन्यासी वेष में दर्शन देकर अनुग्रह किया।

स्वयं उनको संन्यासाश्रम अनुग्रह कर वहाँ के रामानुज सन्निधि से काषाय वस्त्र एवं त्रिदंड़ प्रदान कर शठकोप जीयर नामकरण कर अनुग्रहीत किया। प्रथम शठकोप जीयर ने उनके आदेश से अहोबिल मठ की स्थापना की।

भगवान को ध्यान कर मालोल मूर्ति को प्राप्त किया। उस वक्त से लेकर यह परंपरा आरंभ हुई कि जीयर अपने प्रवास के वक्त मालोल भगवान को अपने साथ पधारकर आराधना करते हैं। भक्तों को भी अपने स्थान में ही दर्शन का भाग्य मिलता है।

गरुड़ भगवान की कठिन तपस्या से प्रसन्न होकर उनकी प्रार्थना के अनुसार गरुड को पुनः नरसिंहावतार के दर्शन दिए। वहीं पर भक्तों को दर्शन देने विराजमान हुए। इसकी मान्यता है कि गरुड़ की तपस्या क्षेत्र होने से पर्वत का नाम गरुड़ाद्रि प्रचलित है।

कील अहोबिल प्रह्लाद वरद नरसिंह मंदिर के सामने 80 फुट का एक ही पत्थर का बना जय स्तंभ है।

मंगलाशासन - 1 आल्वार, 10 दिव्य पद। यहाँ अहोबिल मठ का धर्मशाला है।

क्रमशः

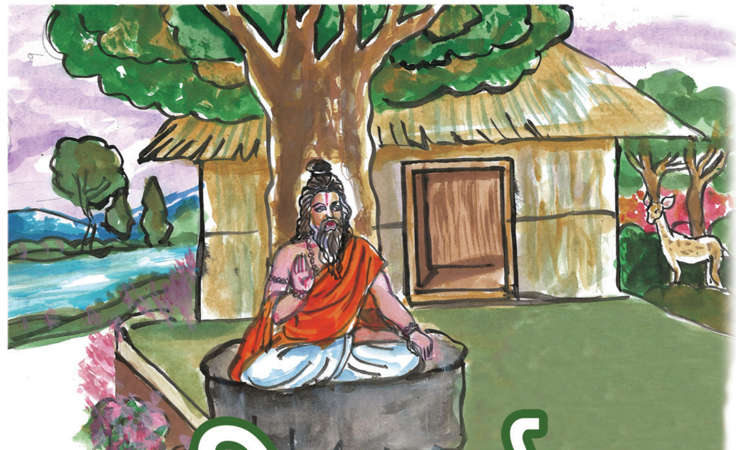

ऋषि दुर्वासा

- डॉ.जी.सुजाता

दुर्वासा ऋषि माता अनसूया और ऋषि अत्रि के पुत्र थे। ऋषि दुर्वासा के संदर्भ में कहा जाता है कि वे त्रेतायुग, द्वापरयुग और सतयुग तीनों युगों में उपस्थित थे। ऋषि दुर्वासा अत्यंत बुद्धिजीवी थे और उन्होंने कई ऋचाओं की रचना की थी। पौराणिक ग्रंथों में ऋषि दुर्वासा के जन्म की कथा का उल्लेख मिलता है।

पौराणिक कथा के अनुसार, एक समय माता पार्वती भगवान भोलेनाथ के साथ एकाकी जीवन व्यतीत कर रही थीं, तभी अचानक से देवताओं ने आकर उनके एकांतवास में विघ्न डाल दिया। इस वजह से भगवान शिव का क्रोध चरण पर पहुँच गया। भोलेनाथ का क्रोध देखकर सभी देवता भयभीत हो गए। कथा के अनुसार माता अनसूया भोलेनाथ और माता पार्वती के दर्शन के लिए कैलाश पहुँची तब पार्वती माँ ने शिवजी को शांत कराने का प्रयास किया। भोलेनाथ शांत तो हो गए लेकिन उनके क्रोध से जन्मी ऊर्जा कैलाश में इधर-उधर टकराकर कैलाश का ही नुकसान करने लगी। तब भगवान शिव ने बताया कि वह इस ऊर्जा को पुनः अपने अंदर नहीं समा सकते हैं क्योंकि यह ऊर्जा उनके तीसरे नेत्र से निकली है और उनका तीसरा नेत्र अगर दोबारा खुला तो उससे सृष्टि को और भी नुकसान होगा। जब माता अनसूया ने यह बात सुनी तब उन्होंने महादेव से आज्ञा मांगी कि वह अपने तपोबल से उनकी इस क्रोध ऊर्जा को अपने भीतर धारण कर सकती हैं। महादेव ने भी माता अनसूया को आज्ञा प्रदान की। माता अनसूया ने क्रोध ऊर्जा को गर्भ में धारण किया था। इसी कारण से महादेव के क्रोध से ऋषि दुर्वासा का जन्म हुआ और क्रोधाग्नि से प्रकट होने के कारण उनके स्वभाव में अत्यंत क्रोध समाहित हो गया।

एक और कथा के अनुसार महर्षि अत्रि जी सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी के मानस पुत्र थे। उनकी पत्नी अनसूयाजी के पातिव्रत्य धर्म की परीक्षा लेने हेतु ब्रह्म, विष्णु और महेश तीनों ही पत्नियों के अनुरोध पर ऋषि अत्रि और अनसूया के चित्रकूट स्थित आश्रम में शिशु रूप में उपस्थित हुए। ब्रह्माजी चंद्रमा के रूप में, विष्णु दत्तात्रेय के रूप में और महेश दुर्वासा के रूप में उपस्थित हुए। बाद में देव पत्नियों के अनुरोध पर अनसूया ने कहा कि इस वर्तमान स्वरूप में वे पुत्रों के रूप में मेरे पास ही रहेंगे। साथ ही अपने पूर्ण स्वरूप में अवस्थित होकर आप तीनों अपने-अपने धाम में भी विराजमान रहेंगे। यह कथा सतयुग के प्रारम्भ की है। पुराणों और महाभारत में इसका विशद वर्णन है। दुर्वासा जी कुछ बड़े हुए, माता-पिता से आदेश लेकर वे अन्न, जल का त्याग कर कठोर तपस्या करने लगे। विशेषतः यम-नियम, आसन, प्राणायाम, ध्यान-धारणा आदि अष्टांग योग का अवलम्बन कर वे ऐसी सिद्ध अवस्था में पहुँचे कि उनको बहुत सी योग-सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। अब वे सिद्ध योगी के रूप में विख्यात हो गए। तत्पश्चात यमुना किनारे इसी स्थल पर उन्होंने एक आश्रम का निर्माण किया और यहीं पर रहकर आवश्यकता के अनुसार बीच-बीच में भ्रमण भी किया। दुर्वासा आश्रम के निकट ही यमुना के दूसरे किनारे पर

महाराज अम्बरीष का एक बहुत ही सुन्दर राजभवन था। एक बार राजा निर्जला एकादशी एवं जागरण के उपरांत द्वादशी व्रत पालन में थे। समस्त क्रियाएँ सम्पन्न कर संत-विप्र आदि भोज के पश्चात भगवत् प्रसाद से पारण करने को थे कि महर्षि दुर्वासा आ गए। महर्षि को देख राजा ने प्रसाद ग्रहण करने का निवेदन किया, पर ऋषि यमुना स्नान कर आने की बात कहकर चले गए। पारण काल निकलने जा रहा था। धर्मज्ञ ब्राह्मणों के परामर्श पर श्रीचरणामृत ग्रहण कर राजा का पारण करना ही था कि ऋषि उपस्थित हो गए तथा क्रोधित होकर कहने लगे कि तुमने पहले पारण कर मेरा अपमान किया है। भक्त अम्बरीष को जलाने के लिए महर्षि ने अपनी जटा निचोड़ क्रत्या राक्षसी उत्पन्न की, परन्तु प्रभु भक्त अम्बरीष अडिग खडे रहे। भगवान ने भक्त रक्षार्थ चक्र सुदर्शन प्रकट किया

और राक्षसी भस्म हुई। दुर्वासाजी चौदह लोकों में रक्षार्थ दौड़ते फिरे। शिवजी की चरण में पहुँचे। शिवजी ने विष्णु के पास भेजा। विष्णु जी ने कहा आपने भक्त का अपराध किया है। अतःयदि आप अपना कल्याण चाहते हैं, तो भक्त अम्बरीष के निकट ही क्षमा प्रार्थना करें। महर्षि दुर्वासा ने ऐसा ही किया। अंबरीष ने भगवान विष्णु को याद किया और उनसे दुर्वासा की रक्षा के लिए प्रार्थना की।

ऋषि अंबरीष ने अपनी कन्या कंदली का विवाह ऋषि दुर्वासा से किया। ऋषि अंबरीष दुर्वासा की क्रोधाग्नि को जानते थे, इसलिए पुत्री के साथ कोई अनिष्ट न हो इसके लिए भी चिंतित थे। उन्होंने ऋषि दुर्वासा से कंदली से कोई भूल हो जाए तो उसे क्षमा कर दिए जाने की प्रार्थना की। तब ऋषि ने उन्हें वचन दिया कि वह अपनी पत्नी के 100 अपराध क्षमा करते रहेंगे। लेकिन एक दिन ऋषि कहीं से प्रवास कर कुछ देरी से आए।

रात में भोजन के बाद उन्होंने विश्राम के लिए कहा साथ ही पत्नी से कहा कि मुझे कल ब्रह्म मुहूर्त में जरूर उठा दें। कंदली की ब्रह्म मुहूर्त में नींद तो खुली, लेकिन आलस के कारण न तो वह खुद उठीं और न हीं ऋषि को उठाया। सुबह सूर्योदय के बाद जब ऋषि की आंख खुली तो दिन चढ़ आया था। अपना अनुष्ठान न कर पाने के कारण वह कंदली पर बहुत क्रोधित हुए और उन्हें भस्म हो जाने का श्राप दे दिया। ऋषि के शाप का तुरंत असर हुआ और कंदली राख बनकर रह गई। जब कंदली के पिता ऋषि अंबरीष आए तो अपनी पुत्री को राख बना देखकर बहुत दुखी हुए। तब दुर्वासा ऋषि ने कंदली की राख को पेड़ में बदल दिया और वरदान दिया कि अब से यह हर पूजा व अनुष्ठान का बनेगी। इस तरह से केले के पेड़ का जन्म हुआ और कदलीफल यानी केले का फल हर पूजा का प्रसाद बन गया।

ऋषि दुर्वासा के जीवन से जुड़ी कथाएँ -

रामायण

वाल्मीकि रामायण के उत्तर कांड में, दुर्वासा राम के दरवाजे पर प्रकट हुए और लक्ष्मण को दरवाजे की रखवाली करते देख, राम से मिलने की मांग की। इस बीच, राम एक तपस्वी के वेश में यम (मृत्यु के देवता) के साथ एक निजी बातचीत कर रहे थे। बातचीत से पहले, यम ने राम को सख्त निर्देश दिए कि उनकी बातचीत गोपनीय रहनी चाहिए, और जो कोई भी कमरे में प्रवेश करेगा उसे मार दिया जाएगा। राम सहमत हो गए और लक्ष्मण को अपने दरवाजे की रखवाली करने और यम को दिए गए अपने वादे को पूरा करने का काम सौंपा।

इसलिए, जब दुर्वासा ने अपनी मांग की, तो लक्ष्मण ने विनम्रतापूर्वक ऋषि से राम की बैठक समाप्त होने तक प्रतीक्षा करने के लिए कहा। दुर्वासा क्रोधित हो गए, और धमकी दी कि यदि लक्ष्मण ने तुरंत राम को उनके आगमन की सूचना नहीं दी तो वे पूरी अयोध्या को शाप दे देंगे। दुविधा में फंसे लक्ष्मण ने निर्णय लिया कि बेहतर होगा कि वे अकेले ही मर जाएँ ताकि पूरी अयोध्या दुर्वासा के शाप के प्रभाव में आने से बच जाए, और इसलिए उन्होंने राम की बैठक में बाधा डालकर उन्हें ऋषि के आगमन की सूचना दी। राम ने जल्दी से यम के साथ अपनी बैठक समाप्त की और ऋषि का उचित शिष्टाचार के साथ स्वागत किया। दुर्वासा ने राम को भोजन कराने की अपनी इच्छा बताई, और राम ने अपने अतिथि की इच्छा पूरी की, जिसके बाद संतुष्ट ऋषि अपने रास्ते पर चले गए।

राम दुःख से भर गए, क्योंकि वे अपने प्रिय भाई लक्ष्मण को मारना नहीं चाहते थे। फिर भी, उन्होंने यम को वचन दिया था और उससे पीछे नहीं हट सकते थे। उन्होंने इस दुविधा को सुलझाने में मदद के लिए अपने सलाहकारों को बुलाया। वशिष्ठ की सलाह पर, उन्होंने लक्ष्मण को हमेशा के लिए छोड़ देने का आदेश दिया, क्योंकि जहाँ तक धर्मपरायण लोगों का सवाल है, ऐसा त्याग मृत्यु के बराबर है। इसके बाद लक्ष्मण सरयू के तट पर गए और सरयू नदी में डूबकर दुनिया को त्यागने का संकल्प लिया।

महाभारत

महाभारत में, दुर्वासा को उन लोगों को वरदान देने के लिए जाना जाता है जो उन्हें प्रसन्न करते थे, खासकर जब उन्हें सम्मानित अतिथि के रूप में अच्छी तरह से सेवा दी गई हो। इन्हीं में से एक है कुंती और दुर्वासा से जुड़ी कथा जब कुंती एक छोटी लड़की थी, वह अपने दत्तक पिता कुंतीभोज के घर में रहती थी। दुर्वासा एक बार राजा कुन्तिभोज के यहाँ मेहमान बनकर गए है। राजा ने कुंती को ऋषि के मनोरंजन और उनके प्रवास के दौरान उनकी सभी जरूरतों को पूरा करने की जिम्मेदारी सौंपी। कुंती ने

धैर्यपूर्वक दुर्वासा के गुस्से और उनके अनुचित अनुरोधों (जैसे रात के विषम समय में भोजन की मांग करना) को सहन किया और महान समर्पण के साथ ऋषि की सेवा की। ऋषि दुर्वासा कुंती की इस सेवा से बहुत खुश हुए, और जाते वक्त उन्होंने कुंती को अथर्ववेद मन्त्र के बारे में बताया, जिससे कुंती अपने मनचाहे देव से प्रार्थना कर संतान प्राप्त कर सकती थी।

मन्त्र कैसे काम करता है, ये देखने के लिए कुंती शादी से पहले सूर्य देव का आह्वान करती है, तब उन्हें कर्ण प्राप्त होता है, जिसे वे नदी में बहा देती है। फिर इसके बाद उनकी शादी पांडू से होती है, आगे चलकर इन्हीं मन्त्रों का प्रयोग करके पांडव का जन्म हुआ था।

शिव पुराण के अनुसार एक बार नदी में स्नान करते समय दुर्वासा के वस्त्र नदी की धारा में बह गए। यह देखकर पास में ही बैठी द्रौपदी ने अपने वस्त्र ऋषि को दे दिए। दुर्वासा ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि आवश्यकता पड़ने पर उन्हें कभी वस्त्रों की कमी नहीं होगी और उनके आशीर्वाद के कारण ही कौरव जुआघर में उनके वस्त्र नहीं उतार पाए और इस प्रकार उनकी लाज रखी।

दुर्वासा के दयालु पक्ष का एक और उदाहरण वह घटना है जब उन्होंने दुर्योधन को वरदान दिया था। पांडवों के वनवास के दौरान, दुर्वासा और उनके कई शिष्य हस्तिनापुर पहुँचे। दुर्योधन अपने मामा शकुनि के साथ ऋषि को संतुष्ट करने में कामयाब रहा। दुर्वासा प्रसन्न होकर उसे वरदान देते हैं।

दुर्योधन, गुप्त रूप से चाहता था कि दुर्वासा क्रोध में पांडवों को श्राप दे, इसलिए उसने द्रौपदी के भोजन करने के बाद ऋषि से जंगल में अपने चचेरे भाइयों से मिलने के लिए कहा, क्योंकि वह जानता था कि तब पांडवों के पास उसे खिलाने के लिए कुछ नहीं होगा।

दुर्योधन के अनुरोध पर दुर्वासा और उनके शिष्य जंगल में पांडवों के आश्रम में गए। वनवास की इस अवधि के दौरान, पांडव अक्षय पात्र के माध्यम से अपना भोजन प्राप्त करते थे, जो हर दिन द्रौपदी के भोजन समाप्त होने के बाद समाप्त हो जाता था।

चूँकि उस दिन दुर्वासा के आने तक दौपदी पहले ही खा चुकी थी, इसलिए उनके लिए कोई भोजन नहीं बचा था और पांडव इस बात को लेकर बहुत चिंतित थे कि अगर वे ऐसे आदरणीय ऋषि को भोजन नहीं करा पाए तो उनका क्या होगा। जब दुर्वासा और उनके शिष्य नदी में स्नान कर रहे थे, तब द्रौपदी ने कृष्ण से मदद के लिए प्रार्थना की।

कृष्ण तुरंत द्रौपदी के सामने प्रकट हुए, उन्होंने घोषणा की कि उन्हें भूख लगी है और उन्होंने उनसे भोजन मांगा। द्रौपदी क्रोधित हो गई और उन्होंने कहा कि उन्होंने कृष्ण से प्रार्थना इसलिए की थी क्योंकि उनके पास देने के लिए कोई भोजन नहीं बचा था। तब कृष्ण ने उनसे कहा कि वे अक्षय पात्र लेकर आएं। जब वह आई, तो उन्होंने चावल का एक दाना और सब्जी का एक टुकड़ा खाया जो उन्हें बर्तन में चिपका हुआ मिला था, और घोषणा की कि वे ''भोजन'' से संतुष्ट हैं।

इससे दुर्वासा और उनके शिष्यों की भूख मिट गई, क्योंकि कृष्ण (स्वयं विष्णु के अवतार) की संतुष्टि का मतलब सभी जीवित चीजों की भूख की तृप्ति थी। ऋषि दुर्वासा और उनके शिष्य स्नान के बाद चुपचाप चले गए, पांडवों के आश्रम में वापस नहीं लौटे, क्योंकि उन्हें डर था कि उन्हें जो भोजन परोसा जाएगा, उसे अस्वीकार करने के उनके अशिष्ट व्यवहार के कारण पांडवों का क्रोध भड़क सकता है।

क्रमशः

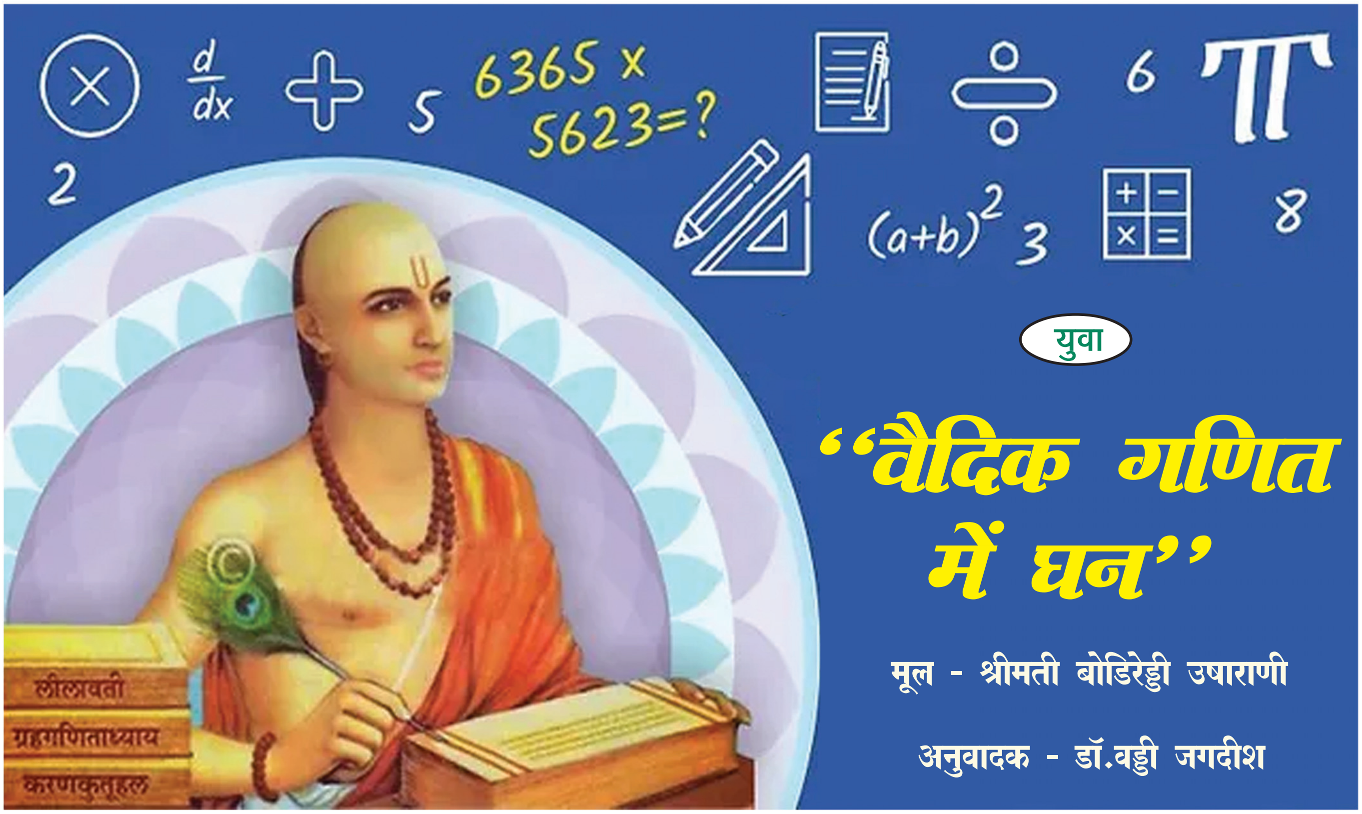

युवा

"वैदिक गणित में घन"

मूल - श्रीमती बोडिरेड्डी उषाराणी

अनुवादक - डॉ.वड्डी जगदीश

बीज गणित सूत्र $(a+b)^3 = a^3+a^2b+ab^2+b^3$

$2a^2b+2ab^2$

$a^3+3a^2b+3ab^2+b^3$

इस सूत्र के आधार पर ही घन एवं घन मूलों का पहचान कर सकते है। सूत्र के अनुसार सबसे पहले यहाँ दी गई दाई अक्षर की संख्या में दशम स्थान की संख्या को घन का हजार स्थान पर लिखना अनिवार्य है। फिर अंकों का अनुपात गुण श्रेणी में रह कर बाकी अंक सैकड़, दशम, प्रथम स्थानों पर लिखना है। और यहाँ सैकड़, दशम स्थानों के अंक दोहरा मूल्य को सैकड़ तथा दशम स्थानों के बराबर नीचे लिखकर जोड़ना चाहिए। तब अंकों का घन प्राप्त होता है।

उदा : 11 का घन चाहिए तो...

यहाँ हजार स्थान वाली संख्या के रूप में 1 है इस का घन मूल्य 1 को लिखना चाहिए। यहाँ अंकों का अनुपात 1 है इसलिए 1 से गुणना करने पर आनेवाली संख्या क्रमशः 1, 1, 1 हैं। इन 'अंकों' को सैकड़, दशम और प्रथम स्थानों पर लिखना चाहिए। और दशम स्थानों के अंकों का दोहरा अंक को उसी स्थान के नीचे बराबर लिखना है।

जैसे 11^3 = 1111

22

1331

उदा : 12 का घन 12^3 चाहिए तो...

यहाँ हजार स्थान वाली संख्या के रूप में 1 को लिखना और इसका घन 1 को भी लिखना। यहाँ अंकों का अनुपात 2 है, इसलिए 2 से गुणना करने पर आनेवाली संख्याएँ क्रमशः 1,2,4,8 बनते हैं। बीच में जो संख्या दी गई हैं उसे दोहरा करने पर आनेवाली

संख्याएँ 2,4 के नीचे लिखकर उसे जोड़ना चाहिए... तभी अंकों का घन मिलता है।

12^3 = 1248

48

1728

ऐसे ही 13^3 = 1 3 9 27

6 18

2 1 9 7

15^3 = 15 25 125

10 50

33 8 5

21^3 = 8 4 2 1

8 4

9 2 6 1

23^3 = 8 12 18 27

24 36

12 1 6 7

ऐसे ही घनों का पल को पहचान कर सकते हैं।

''घनमूल''

नीचे दी गई विधियों द्वारा 5, 6 अंकों वाली संख्याओं का घनमूल को पहचान कर सकते हैं। पहले नीचे दी गई तालिका के आधार पर 1 से 10 तक अंकों का घनों को याद रखना चाहिए।

संख्या :	1	2	3	4	5
वर्ग :	1	8	27	64	125
संख्या :	6	7	8	9	10
वर्ग :	216	343	512	729	1000

उपर्युक्त तालिका से 1, 4, 5, 6, 9,10 संख्याएँ जब अंत वाली संख्या होने पर ही तब घन मूल संख्याएँ बनते हैं। जब संख्या '2' से खत्म होने पर उसका घनमूल 2, 7 से खत्म होते हैं तब घन मूल 3 बनता है, अगर उसे अंत होने पर उस का घन मूल भी 7 बनता है।

उदा : 1, 2, 1, 6, 7 का घन मूल चाहिए तो...

तालिका के आधार पर 12 संख्या 2, 3 का घनों के बीच में होती है। तभी घनों का दशम स्थान संख्या में छोटी संख्या 2 बनता है। इस में प्रथम स्थान पर 7 है इसलिए घन में प्रथम स्थान वाली संख्या 3 बनता है।

इसलिए यहाँ 12, 167 का घन मूल 23 बनता है। ऐसे ही घनमूलों को आसानी से गणना कर सकते हैं।

''चतुर्थमूल''

मुख्य बिंदु :

इस को पहचान करने के लिए दो प्रकार के वर्गों को पहचान करना चाहिए।

उदा : 256 का चतुर्थमूल को पहचानने के लिए... पहले उसका वर्गमूल पहचान करना चाहिए। इसका वर्गमूल 16 बनता है। फिर 16 को वर्गमूल पहचान करने पर 4 बनता है। इसलिए 256 का चतुर्थ वर्गमूल 4 है।

(आयुर्वेद)

चुकन्दर

- डॉ.सुमा जोषि

यह पौधा एक जडवाली सब्जी है जिसे टेबल बीट, गार्डन बीट, डिनर बीट के नाम से भी जाना जाता है। इसे रंग के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। लाल चुकन्दर या गोल्डन चुकन्दर। यह एक पत्तेदार सब्जी भी है जिसे चुकंदर साग कहा जाता है। चुकन्दर को कच्चा, भूनकर, भाप में पकाकर या उबालकर खाया जा सकता है। चुकंदर को भी डिब्बाबंद किया जा सकता है, या तो साबुत या काटकर और अक्सर अचार बनाया जाता है, मसालेदार बनाया जाता है या मीठी और खट्टी चटनी में परोसा जाता है।

ग्रीक पौराणिक कथाओं में, चुकन्दर मुख्य रूप से देवी एफ्रोडाइट से जुडा हुआ था, इस विश्वास के साथ कि वह अपनी सुंदरता बनाए रखने के लिए चुकन्दर खाती थी। प्राचीन रोमन भी यही दृष्टिकोण रखते थे। चुकन्दर को प्राचीन मध्य पूर्व में मुख्य रूप से साग के लिए उगाया जाता था। प्राचीन मिस्र, यूनानियों और रोमनों द्वारा उगाया जाता था। मध्य युग से चुकन्दर का उपयोग विभिन्न स्थितियों, विशेषरूप से पाचन और रक्त से सम्बन्धित बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता था। 17वीं शताब्दी के मध्य में, शराब को अक्सर चुकंदर के रस से रंगा जाता था। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यूरोप में भोजन की कमी के कारण बडी कठिनाइयाँ हुई, जिनमें मैंगेलवुर्जेल रोग के मामले भी शामिल थे, जैसा कि राहतकर्मी इसे कहते थे। यह केवल चुकन्दर खाने का लक्षण था। चुकन्दर Amaranthaceae. कुटुम्ब से है और इसका वैज्ञानिक नाम है - Beta Vulgaris. इसकी खेती मुख्य रूप से इसकी खाने योग्य जड के लिए की जाती है और इसमें बडे, एकान्तर रूप से व्यवस्थित पत्ते होते हैं जो कुछ हद तक दिल के आकार के होते हैं, यह पौधा छोटे हरे फूल पैदा करता है और माना जाता है कि इसकी उत्पत्ति भूमध्यसागरीय क्षेत्र में हुई है।

इसका संस्कृत नाम है - पलक्य/रक्तगृंजन। चुकन्दर में यह निम्न लिखित रासायनिक पाये जाते हैं - Betalains, Carotenoids, Phenolic, Nitrates और Vitamins. चुकंदर में फाइबर, शर्करा और खनिज भी होते हैं। चुकन्दर उगाने के लिए, उसकी बीजों को अच्छी जल निकासीवाली ढ़ीली मिट्टी में कुछ इञ्च की दूरी पर रखकर सीधे रोपें। लगातार नमी सुनिश्चित करें। आमतौर पर विविधता और जलवायु के आधार पर लगभग 2–3 महीने लगते हैं। चुकन्दर थोडी अम्लीय से तटस्थ पीएच स्तरवाली उपजाऊ मिट्टी को पसन्द करता है।

चुकन्दर और स्वास्थ्य में प्रयोग

हृदय स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है :

1) नाइट्रेट से भरपूर, चुकन्दर रक्तवाहिका कार्य में सुधार करके रक्तचाप को कम करने में मदद करता है, जिससे हृदयरोग का खतरा कम होता है।

2) एथलेटिक प्रदर्शन में सुधार-नाइट्रेट ऑक्सीजन प्रवाह और सहनशक्ति को बढ़ाते हैं, जिससे यह सहनशक्ति बढ़ाने के लिए एथलीटों के बीच पसन्दीदा है।

3) मस्तिष्क के कार्य में सहायता करता है - मस्तिष्क में रक्त का प्रवाह बढ़ने से संज्ञानात्मक कार्य में सुधार हो सकता है और मनोभ्रंश का खतरा कम हो सकता है।

4) पाचन में सहायता-उच्च फाइबर सामग्री आन्त के स्वास्थ्य को बढ़ावा देती है, कब्ज को रोकती है और लाभकारी आन्त बैक्टीरिया का समर्थन करती है।

5) विषहरण को बढ़ाता है - इसमें बीटालेंस होता है, जो लीवर को विषहरण करने और शरीर से विषाक्त पदार्थों को निकालने में मदद करता है।

6) चुकन्दर का रस लीवर को डिटॉक्सीफाई करने और उसके कार्य को बेहतर बनाने में मदद करता है।

7) चुकन्दर में एंटीऑक्सीडेंट होते हैं जो सूजन से लडने में मदद कर सकते हैं।

8) यह खून की कमी (एनीमिया) में लाभकारी है। चुकन्दर संज्ञानात्मक कार्य को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है।

9) चुकन्दर में नाइट्रेट की उच्च सान्द्रता होती है, जो रक्तचाप के स्तर को कम करने में मदद कर सकती है। इससे हृदय रोग और स्ट्रोक का खतरा कम हो सकता है।

10) चुकन्दर फाइबर का एक अच्छा स्रोत है, जो पाचन स्वास्थ्य को लाभ पहुँचाता है और कई पुरानी स्वास्थ्य स्थितियों के जोखिम को कम करता है।

11) चुकन्दर में नाइट्रेट होते हैं, जो मस्तिष्क में रक्त के प्रवाह को बढ़ा सकते हैं और संज्ञानात्मक कार्य में सुधार कर सकते हैं। हालाँकि, इस क्षेत्र में और अधिक शोध की आवश्यकता है।

12) कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि चुकन्दर में पाए जानेवाले कुछ यौगिकों में कैंसर से लडनेवाले गुण हो सकते हैं। फिर भी, इस सम्भावित सम्बन्ध को बेहतर ढंग से समझने के लिए और शोध की आवश्यकता है।

13) चुकन्दर में पानी की मात्रा अधिक, फाइबर और प्रोटीन की मात्रा मध्यम और कैलोरी की मात्रा कम होती है। ये सभी गुण ऊर्जा खपत को संतुलित कर सकते हैं और आहार की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं।

14) कुछ लोग चुकन्दर को सूपरफूड कहते हैं क्योंकि यह आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर होता है।

15) चुकन्दर में फाइबर की मात्रा अधिक होती है और यह पेट में अच्छे बैक्टीरिया के विकास को बढ़ावा देता है। यह पाचन तंत्र में प्रचुर मात्रा में स्वस्थ बैक्टीरिया होने से बीमारी से लडने और प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने में मदद मिलती है। फाइबर पाचन में भी सुधार करता है और कब्ज के खतरे को कम करता है।

16) शोध से पता चलता है कि चुकन्दर का रस पीने से सूजन और रक्त प्रवाह में सुधार हो सकता है, जो त्वचा के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है।

17) एक कप चुकन्दर के रस में 1.14 मिलीग्राम आयरन होता है, जो आयरन के वर्तमान अनुशंसित दैनिक मूल्य का लगभग 8% है। आहार में आयरन के स्रोत शामिल करने से एनीमिया का खतरा कम हो सकता है।

18) 12 सप्ताह तक जो लोग अकेले चुकन्दर का रस पीते हैं या आहार के साथ पीते हैं, उनमें हेपेटिक स्टीटोसिस, यकृत में अतिरिक्त वसा में उल्लेखनीय कमी आई है। यह भूमध्यसागरीय लोगों में शोध

किया गया है। इसके बाद शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला कि चुकन्दर के रस में गैर-अल्कोहल फैटी लीवर रोग (NAFLO) के इलाज की क्षमता है। हालाँकि अधिक शोध आवश्यक है।

19) चुकन्दर पोटेशियम का एक अच्छा स्रोत है, जो एक खनिज और इलेक्ट्रोलाइट है जो तंत्रिकाओं और मांसपेशियों को ठीक से काम करने में मदद करता है। चुकन्दर का जूस कम मात्रा में पीने से पोटेशियम स्तर को इष्टतम बनाए रखने में मदद मिल सकती है।

20) फोलेट एक विटामिन-बी है जो न्यूरल ट्यूब दोष, जैसे स्पाइना बैफिडा और अनेनासिफॉली को रोकने में मदद करता है। इसके साथ-समयपूर्व प्रसव होने का जोखिम भी कम हो सकता है।

21) चुकन्दर में कॉपर और फोलेट के साथ-साथ हमारे दैनिक-मैग्नीशियम का 6% पाया जाता है। ये खनिज हमारी हड्डियों को मजबूत बनाने में मदद करते हैं।

22) चुकन्दर में प्रोटीन, विटामिन-ए और कैल्शियम जैसे पोषक तत्व होते हैं जो स्वस्थ बालों के विकास को बढ़ावा देते हैं।

23) चुकन्दर खोपडी के छिद्रों को कस कर और बालों के रोमों तक ऑक्सीजन पहुँचाकर बालों का झडना कम कर सकता है।

24) चुकन्दर के प्राकृतिक ब्लीचिंग गुण त्वचा का रंग हल्का करने और टैन कम करने में मदद कर सकते हैं।

25) चुकन्दर का Betalains, एक प्रकार का एंटीऑक्सीडेंट, वय के प्रभाव को कम करता है।

26) अगर मुंहासों से परेशान हैं तो सादे दही में दो चम्मच ताजा चुकंदर का रस मिलांफ और प्रभावित जगह पर लगाएँ। इसे 15 मिनट के लिए छोड दें और धो लें।

मात्रा से अधिक प्रयोग किया तो....

1) लाल चुकन्दर (लेकिन पीले या सुनहरे चुकन्दर नहीं) मूत्र को लाल कर सकते हैं। इसे Beeturia कहा जाता है और यह पूरी तरह से सुरक्षित है।

2) एक दिन में एक कप से अधिक चुकन्दर खाने से गाउट (एक प्रकार का गठिया) और गुर्दे की पथरी हो सकती है।

3) एक कप चुकन्दर में 9 ग्राम चीनी होती है। यह रक्त शर्करा की स्तर को बढ़ा सकता है।

4) चुकन्दर की खुराक लेना असली चुकन्दर खाने जितना अच्छा नहीं है।

5) चुकन्दर के रस में मौजूद नाइट्रेट रक्तचाप को प्रभावित कर सकता है।

6) निम्न रक्तचापवाले या वर्तमान में रक्तचाप की दवा ले रहे किसी भी व्यक्ति को अपने आहार में चुकन्दर या इसका रस शामिल करने से पहले डाक्टर से बात करनी चाहिए।

7) ज्यादा मात्रा में चुकन्दर खाने से कुछ व्यक्तियों को पेट में गडबडी, सूजन या गैस का अनुभव हो सकता है।

8) हालांकि दुर्लभ, कुछ लोगों को चुकन्दर से एलर्जी की प्रतिक्रिया का अनुभव हो सकता है, जिसमें चकत्ते पित्ती या खुजली शामिल है।

9) सावधानी से उपयुक्त मात्रा में प्रयोग करें। स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें।

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य
आयोजक - आचार्य के.रामसूर्यनारायण
अनुवाद - श्री अवधेष कुमार शर्मा

षट्त्रिंशः पाठः - छत्तीसवाँ पाठ

(धा) (व-प्र.ए) (अर्थ)

१. ते सर्वेपि रामायणं पठन्ति।
१. वे सभी रामायण पढ़ रहे है।
२. यूयं किं लिखथ?
२. तुम सब क्या लिख रहे है?
३. एकः वानरः अस्मान् त्रासयति।
३. एक बन्दर हम सभी को डराता है।
४. अरे युष्मद्गृहे मार्जालं के पोषयन्ति?
४. अरे तुम्हारे घर में बिल्ली को कौन पालते है।
५. अस्माकं मार्जालः प्रतिनम्रम् एकं मूषकं मारयति।
५. हमारी बिल्ली प्रति रात एक चूहे को मारती है।
६. पात्राणि सम्यक् प्रक्षालय।
६. बर्तनों को अच्छी प्रकार से धोएं।
७. देव एव सर्वान् रक्षति।
७. भगवान ही सभी को रक्षा करता है।
८. अद्य प्रातः त्वं मुखं अक्षालयः किम्? नो चेत् जनकः त्वां ताडयिष्यति।

(धा) (व-प्र.ए) (अर्थ)

८. क्या आपने प्रातःकाल अपना मुह धोया? नही, तो पिताजी तुम्हें पीटेंगे।
९. घण्टां मा नादय।
९. घण्टा को मत बजाओ।
१०. वैश्यः घृतं तोलयति
१०. वैश्य घी को मापता है।
११. एकः चोरः मां वञ्चयित्वा मम वस्त्राणि अचोरयत्।
११. एक चोर मुझे धोखा देकर मेरे वस्त्रों को चुरा ले गया।
१२. अहं रामाय दश धारयामि।
१२. मुझे राम को दस देने है।
१३. किमर्थं बालकम् अधः अपातयः?
१३. बालक को नीचे क्यों गिराया?
१४. रामः जनकं सर्वदा तोषयति।
१४. राम ने पिताजी को हमेशा सन्तुष्ट करता है।

अप्रैल महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

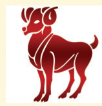

मेष राशि - इस मास आपको सुख-दु:ख दोनों का अनुभव होगा, मंगल नीच राशीगत तथा शनि की साढ़ेसाती के प्रभाव से नौकरी-व्यवसाय के क्षेत्रों में बाधा। राजकीय कार्यों में अनुकूलता, कार्य में श्रमपूर्ण सफलता। सोची योजनाओं में विघ्न-बाधाएँ उत्पन्न होगी, अनावश्यक लोगों से मेल-मिलाप न करें, धनागम में रुकावट।

वृषभ राशि - यह माह आपके लिए उत्तम सिद्ध होगा, अन्न-वस्त्र-द्रव्यादि का लाभ, नौकरी से उल्लास, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा में कर्मों के द्वारा सिद्धि। दूरस्थ यात्राएँ, विदेशियों से लाभ, कौटुम्बिक सुख, स्वास्थ्य उत्तम, रोजी-रोजगार में अनुकूलता। छात्रों के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता। अपने परिश्रम पर ध्यान रखे। संघर्ष अधिक रहेगा।

मिथुन राशि - बुध नीचराशि में होने से व्यवसाय में अनिश्चितता रहेगी जिससे धनागम की चिन्ता बनी रहेगी। आय कम खर्च अधिक, शरीर स्वस्थ, मन प्रसन्न, सामयिक-सामाजिक विकास, धर्मादि कार्यों में संलग्नता। उत्तरार्ध में समस्याओं का समाधान, पारिवारिक उलझनों से क्रोध की सम्भावना।

कर्कटक राशि - अनावश्यक मानसिक तनाव से वाद-विवाद, शारीरिक कष्ट, व्यवसाय के क्षेत्रों में उतार-चढ़ाव के पश्चात धन लाभ। सन्तान के कार्यों में उलझनें एवं विलम्ब जिससे कष्ट। शत्रुओं से सावधान, शत्रुपक्ष प्रबल है, किसी के ऊपर विश्वास न करें। उच्चाधिकारियों से वैमनश्ता, वैवाहिक सुख।

सिंह राशि - राशिस्वामी सूर्य अष्टम भाव में बुध-शनि-राहु आदि ग्रहों के साथ तथा शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव प्रारम्भ होने से धन लाभ एवं बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ होंगी। दैनन्दिन जीवन की नियमितता एवं व्यावहारिक कुशलता से ही प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा। रोजी-रोजगार सामान्य। दाम्पत्य जीवन सुखमय।

कन्या राशि - यह माह आपके लिए मध्यम फलदायक रहेगा। शारीरिक कष्ट, अत्यधिक भागदौड़ रहेगी। घर-परिवार में किसी मंगल कार्य का सम्पादन, कौटुम्बिक उलझनों में वृद्धि, अपनों का असहयोग जिससे मन खिन्न रहेगा, किसी के ऊपर विश्वास करके कार्य न करें, सोच समझकर निर्णय करें। परिश्रम करने से लाभ।

तुला राशि - आपका शुक्र उच्चस्थ होने के कारण गुप्त धन की प्राप्ति। पारिवारिक सुख-सौहार्द, सामयिक कार्यों में प्रगति, शारीरिक निरोगता, रोजी-रोजगार, व्यापारादि क्षेत्रों में उतार-चढाव बना रहेगा। धार्मिक-सामाजिक कार्यों में संलग्नता एवं अभिरुचि। वाहनादि सुख, रोगादि कष्ट एवं शत्रुभय बना रहेगा।

वृश्चिक राशि - मंगल नीचराशिगत होने से मानसिक तनाव, उदर विकार, अर्थागम में बाधा, वृथा खर्च, घरेलु कार्यों में उलझनें एवं व्यावसायिक परेशानियों का सामना करना पडेगा। कौटुम्बिक दायित्व निर्वहन में कठिनाई, मांगलिक कार्यों में धन व्यय। शनि की ढैय्या का प्रभाव हट जाने से किसी नवीन कार्यक्षेत्र का शुभारम्भ।

धनुष राशि - शक्ति-साहस की अभिवृद्धि, शारीरिक कष्ट, घरेलु उलझनें व चोटादि का भय लगा रहेगा। सामयिक समस्याओं का समाधान, आर्थिक उन्नति, राजकीय सहयोग, सन्तान सम्बन्धी चिन्ता एवं परेशानी से मन खिन्न रहेगा। उत्तरार्ध में अनुकूल स्थिति बनेगा, दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। आलस्य बना रहेगा।

मकर राशि - मंगल गुरु की शुभाशुभ दृष्टियां तथा शनि-साढेसाती का प्रभाव हट जाने से मान-सम्मान में वृद्धि, धन-लाभ व उन्नति के विशेष अवसर मिलेंगे। आरोग्य सुख, अव्यवस्थित दिनचर्या, कार्यों में श्रमपूर्ण सफलता। छात्रों के लिए विशेष परिश्रम अपेक्षित है। अनावश्यक समय को ध्यान में रखकर कार्य सम्पादन करें।

कुंभ राशि - व्यापारिक क्षेत्रों में उन्नति, उत्तरोत्तर धन वृद्धि। पूर्व विचारित योजनाओं में आंशिक सफलता प्राप्त होगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी से शारीरिक एवं मानसिक कष्ट, चोटादि का भय बना रहेगा। अपने सहयोगियों-इष्ट मित्रों-कुटुम्बियों का पूर्ण सहयोग जिससे हर्ष बना रहेगा।

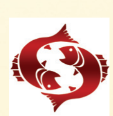

मीन राशि - आपके राशि पर शनि का संचार होने के कारण पारिवारिक मतभेद कई उलझनें का सामना करना पडेगा। स्वास्थ्य सामान्य, मनोद्विग्नता किन्तु आर्थिक क्षेत्र में सफलता, धार्मिक-सामाजिक कार्यों में संलग्नता। छात्रों के लिए प्रतियोगी क्षेत्र में सफलता, विद्या-बुद्धि का विकास, अपने क्रोध पर नियंत्रण रखे।

(नीतिकथा)

दोनों हाथ उलीचिये

- श्री के.रामनाथन

लकिमपुर नामक गाँव में माखनलाल नामक एक आदमी रहता था। वह बड़ा धनवान था और उसके पास बड़ी खेती थी। उसकी खेती में अनेक लोग काम कर रहे थे। माखनलाल को पैसे की कोई कमी नहीं थी। वह अपने आस-पास के गरीब किसानों के खेत को भी खरीद लेता था। इससे उसकी आमदनी बढ़ती जा रही थी। इतना धन मिलने पर भी उसमें किसी गरीब को भी छोटी सी मदद करने की आदत नहीं थी। यहाँ तक कि वह अपने खेत में काम करने वाले पर भी कोई दया नहीं रखता था। वह उनसे बड़ी कड़ाई से काम लेता था और उनकी मजदूरी में एक भी पैसा ज्यादा नहीं देता था। माँगने पर भी वह यही कहता था कि तुम्हारे परिश्रम से भी मेरी मजदूरी अधिक है।

उसका विवाह पड़ोसी गाँव के एक धनवान व्यापारी की बेटी सुलेखा से हुई। विवाह के बाद थोड़े समय तक वह आनंद का जीवन बिता रहा था। दुर्भाग्यवश उसे कोई बाल बच्चा पैदा नहीं हुआ था। गाँववाले मिलकर उस गाँव में एक विष्णु मंदिर का निर्माण कर रहे थे। गाँववालों ने धनवान माखनलाल के पास आकर यहा माँग रखी थी कि मंदिर में मूर्ति निर्माण के लिए थोड़े धन की जरूरत है। आप तो बड़े धनवान हैं। यदि आप सहायता करें तो मूर्ति बनाकर स्थापित करने का काम पूरा हो जाएगा और मंदिर भी भक्तों के दर्शन के लिए खोल दिया जाएगा।

गाँववालों की बात सुनकर माखनलाल ने कहा, "मैं अपने पैसों से खेती करता हूँ और खेत में काम करने वाले नौकरों को उचित पैसा देकर काम लेता हूँ। मेरे अपने परिश्रम और प्रयास से मेरी कमाई बढ़ती है। ऐसी हालत में इस प्रकार मंदिर निर्माण करना, मूर्ति निर्माण करना ऐसे कार्य से लोगों को क्या फायदा मिलेगा। काम करके पैसा कमाना छोड़कर इस प्रकार बेकार कार्य करेंगे तो लोगों में आलसी की भावना ही बढ़ेगी।" माखनलाल की बात सुनकर गाँववाले निराश हो गये। उनके पास पैसों की कमी के कारण मूर्ति निर्माण का कार्य भी रुख गया। इससे मंदिर का काम ऐसे ही रह गया।

एक दिन यकायक माखनलाल के मन में यह विचार उठा कि मैं इतना धन कमा रहा हूँ और मेरे पास इतनी संपत्ति भी है। मेरे बाद इन सबका क्या होगा। मेरे तो कोई बच्चे भी नहीं है। इस विचार से उसके मन में बड़ी चिंता आ बैठ गयी। वह रोज इस विचार से दुख में डूब जाता था। वह अपनी चिंता को पत्नी और कुछ मित्रों से भी बताया। उन सबने यही कहा कि कुछ दान कार्य करने पर तुम्हारी चिंता मिट जाएगी। लेकिन लोभ से भरा उसका मन उसे मानने तैयार नहीं था। इससे उसकी चिंता दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही थी और यहाँ तक कि वह एक रोगी सा बन गया।

एक दिन उस गाँव में महान साधु आ ठहरे थे। गाँव भर के लोग उनके दर्शन करने और उनका आशीर्वाद पाने जाते रहते थे। गाँववालों ने साधु से निवेदन किया कि रुख गया मंदिर का काम पूरा हो जाय और मंदिर लोगों के दर्शन के लिए खोल दिया जाय। साधु ने उनका निवेदन बड़े स्नेह से सुना और यही कहा कि समय आने पर सब सफल होगा। माखनलाल की पत्नी ने अपने पति को समझाया कि यदि हम भी साधु से मिलें तो हमारी चिंता दूर हो जाएगी। लोभी धनवान ने पहले उसकी बात

पर उतना ध्यान नहीं दिया, परंतु पत्नी के बार-बार कहने पर राजी हो गया।

पति-पत्नी वे दोनों साधु से मिलने गये। उन दोनों ने साधु के चरण पर नमस्कार करके उनके सामने बड़ी नम्रता से खड़े रहे थे। उन दोनों को देखकर साधु ने सवाला किया, "आपकी समस्या क्या है?" तब धनवान ने कहा, "स्वामी जी, मैं इस गाँव में बड़ा धनवान हूँ। मेरे पास बड़ी संपत्ति है। मुझे संपत्ति की कोई चिंता नहीं है। फिर भी मुझ में कोई चैन नहीं है। मेरे मन में शांति स्थापित करने के लिए और चिंता से मुक्त होने के लिए मुझे क्या करना है?"

साधु ने स्पष्ट समझ लिया कि धनवान की समस्या क्या है। उन्होंने उस ओर आ रहे एक छोटे बालक को अपने पास बुलाया और उसके हाथ में एक बड़ा आम दिया। बच्चा बड़ी खुशी से उसे अपने एक हाथ में ले लिया। साधु ने और एक आम उसे दिया तो उसने अपने दूसरे हाथ में उसे ले लिया। अब साधु ने और एक आम उसे दिया तो वह बालक ने बड़ी मुश्किल से उसे ले लिया, परंतु उसे पकड़ न सकने के कारण आखिर उन तीनों आमों को ऐसे ही नीचे गिर दिया। फलों के नीचे गिरते देखकर वह बालक रो उठा।

साधु ने धनवान को उस बालक के व्यवहार को दिखाकर समझाया, "तुम्हारी हालत भी यही है। असीमित धन-जौलत के कारण ही तुममें ऐसी अशांति आ गयी है। तुम इस गाँव में बन रहे मंदिर निर्माण कार्य में मदद करो जिससे तुम्हारी ऐसी बेचैनी दूर हो जाएगी।" साधु के उपदेश पर धनवान ने गाँव के लोगों को बुलाकर मंदिर में मूर्ति निर्माण के लिए आवश्यक धन दान में दिया। उसकी सहायता से मंदिर का काम पूरा हुआ और विष्णु मंदिर गाँव के लोगों को दर्शन के लिए खोल दिया गया। लोग रोज वहाँ आकर भगवान विष्णु के दिव्य दर्शन करने लगे और मन में सोचने लगे कि आखिर धनवान माखनलाल के कारण ही यह सब संभव हुआ। उनके ऐसे आशीष से माखनलाल के मन की बेचैनी दूर हुई और उसे एक बच्चे की प्राप्ति भी हुई। तब से वह अपने कमाई से दान कार्य के लिए उचित सहायता करने लगा और घर में आनंद भर गया। कबीरदास की वाणी के अनुसार-

जो जल बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम।
दोऊ हाथ उलीचिए यही सयानों काम।।

सच है जीवन समुद्र को पार करना है तो नाव में बढ़ते जल को उलीचना चाहिए। तभी हम सुरक्षित रूप में समुद्र पार उतार सकते हैं।

फरवरी-2025 महीने का क्विज-31 के समाधान

1) श्री पंचमी या मदन पंचमी, 2) माँ सरस्वती,
3) भृगु, 4) कोल्हापुर,
5) लचीला नामक एक बूढ़ी,
6) देवहूति, 7) वशिष्ठ,
8) आदिबदरी, वृद्धबदरी, भविष्यबदरी, योगबदरी और बदरीनाथ,
9) माँ पार्वती, 10) महाशिवरात्रि,
11) हिमवंत, 12) भगवान शिव,
13) पुनीतवती, 14) आम,
15) भीष्म एकादशी/जया एकादशी.

फरवरी-2025 महीने का क्विज-31 के समाधान के विजेता

चि. आराध्या कुमारी
चंदा नंबर : IM1606240897

चित्रकथा

सकल सद्गुण संपन्न श्रीराम

तेलुगु मूल - श्री के.वेंकटअप्पलाचार्युलु
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री के.वी.कोटिलिंगाचारि

'रामायण' में श्रीराम का सद्गुण वैभव को बताने वाले कथा सार का दृश्य बाल-बच्चों के लिए...

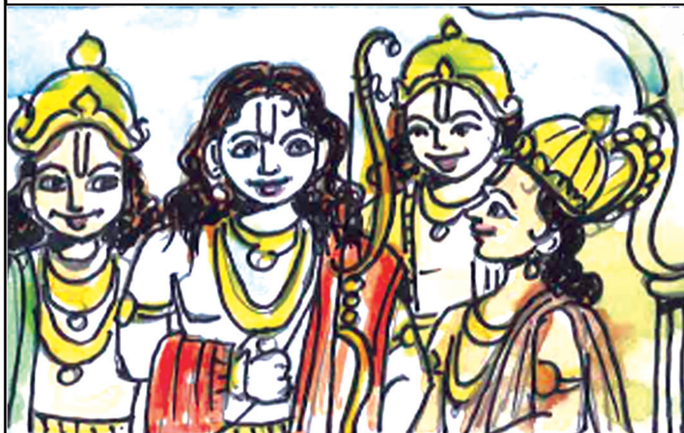

दशरथ के चार पुत्र राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न थे। वे चारों भाईचारा के प्रतीक है।

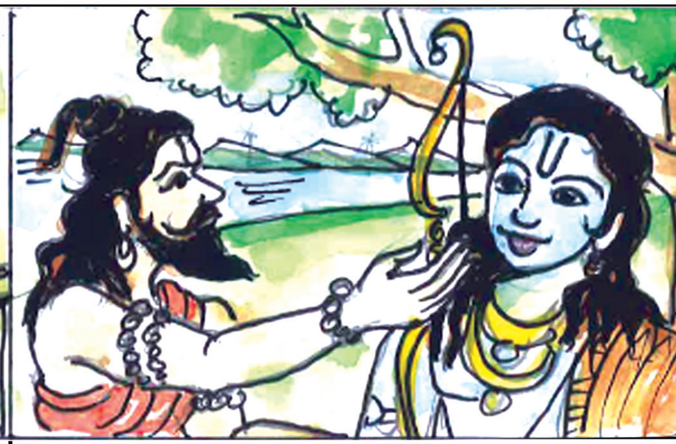

राम जैसा शिष्य, विश्वामित्र जैसा गुरु इस विश्व में नहीं है। गुरु-शिष्यों का रिश्ता लाजवाब है।

अपने पिता के आज्ञा का पालन करनेवाला राम अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ मिल कर 14 साल वनवास केलिए चले गये।

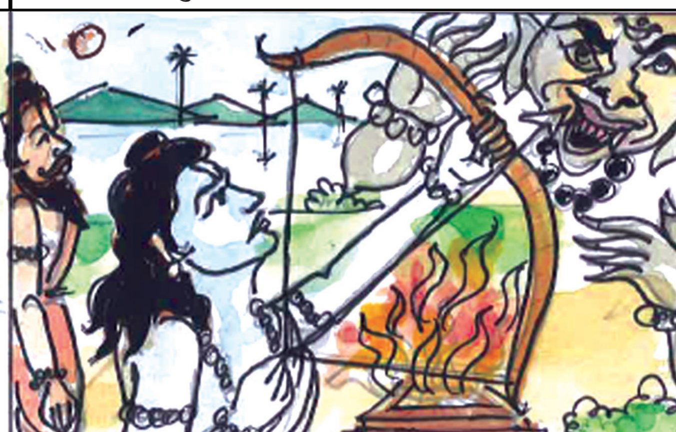

महर्षियों की आज्ञाओं का पालन करनेवाला सौशील्यराम और राक्षसों से महर्षियों की रक्षा करनेवाला अनाथ रक्षक राम है।

गौतम के आश्रम में पत्थर बनी अहल्या को राम के चरण स्पर्श से शाप विमोचन हुआ।

राम-लक्ष्मण दोनों ने गौतम महर्षि का आश्रम को संदर्श करके पुनीत बन गये।

भक्तवत्सल राम ने अपने पिता के दोस्त जटायु का अंतिम संस्कार करके मोक्ष प्रदान किया।

सुग्रीव से दोस्ती करके, स्नेह धर्म को अच्छी तरह से निभानेवाला सद्गुण संपन्न श्रीराम। है

हनुमान को अपना सेवक बनाकर पुत्रवात्सल्य दिखानेवाला करुणासागर श्रीराम है।

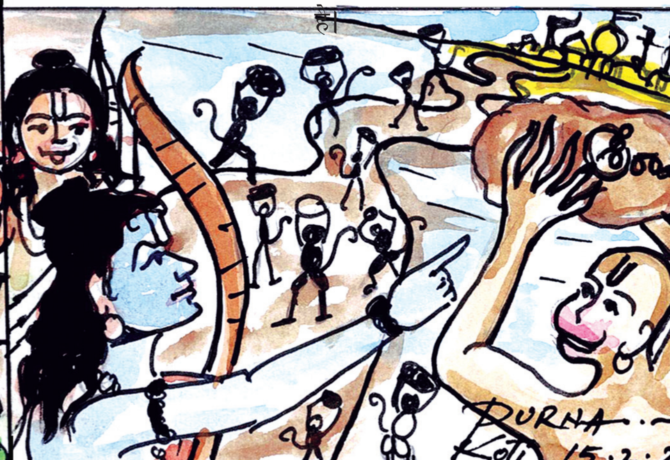

वानरों की मदद से दक्षिण दिशा में स्थित सागर पर बाँध का निर्माण करनेवाला वैज्ञानिक राम है।

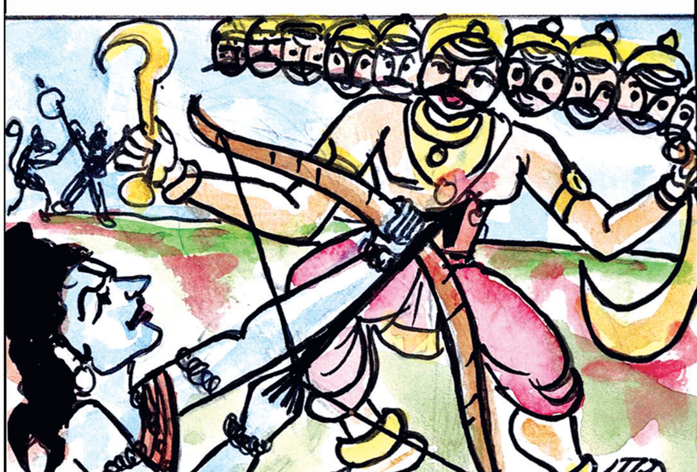

दशकंठ का वध करके, सीता के साथ अयोध्या लौट आये राम का राज्याभिषेक हुआ।

एक ही बात, एक ही पत्नी, एक ही मार्ग और एक ही बाण से संपन्न मूर्ति रघुराम है। लगभग 11 हजार वर्ष पालन करनेवाले जगदभिराम श्रीराम 'रामराज्य' के नाम से ख्याति पाये हैं। स्वस्ति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

क्विज-33

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम...
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता..
....
मोबाइल नं...

1) कौशल्या-दशरथ का पुत्र का नाम क्या है?
ज)..
2) 'रामचरितमानस' के लेखक कौन है?
ज)..
3) वकुला माता के पुत्र का नाम क्या है?
ज)..
4) तिरुद्वारका, गुजरात के क्षेत्र का विमान गोपुर का नाम क्या है?
ज)..
5) भगवान विष्णु का छठवा अवतार क्या है?
ज)..
6) दुर्वासा का माता-पिता कौन है?
ज)..
7) रावण का वध किसने किया था?
ज)..
8) वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया तिथि के दिन कौन सा पर्व मनाया जाता है?
ज)..
9) आं.प्र. में स्थित सिंहाचल क्षेत्र में अक्षय तृतीया के दिन कौन सा उत्सव को संपन्न करते हैं?
ज)..
10) वानरों की सहायता से समुद्र में कौनसा निर्माण किया था?
ज)..
11) जटायु को अंतिम संस्कार किसने किया था?
ज)..
12) सीता माता का पति का नाम क्या है?
ज)..
13) दशरथ को कितने सुपुत्र है?
ज)..
14) कुंती और सूर्यदेव का पुत्र का नाम क्या है?
ज)..
15) ऋषि दुर्वासा का पत्नी का नाम क्या है?
ज)..

बिंदी को जोड़िए

रंगों को भरिये क्या!

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) पत्र-पुष्प — अ) ऊर्जा
2) सूर्य — आ) पूजा-अर्चना
3) भूमि — इ) तारे
4) राम — ई) खनिज एवं लवण
5) चाँद — उ) सीता

1) आ 2) अ 3) ई 4) उ 5) इ

कार्यसिद्धि हनुमान स्तोत्र

त्वमस्मिन् कार्यनिर्योगे
प्रमाणं हरिसत्तम।
हनुमान् यत्नमास्थाय
दुःख क्षयकरो भव॥

चित्रों को जोडिएँ

(a)

(b)

(c)

(d)

(e)

(1)

(2)

(3)

(4)

(5)

जवाब : a) भगवान श्रीराम (5.तिरुमल), b) श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर (4.चंद्रगिरि), c) श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर (1.ओंटिमिट्टा), d) श्री पट्टाभिरामस्वामी मंदिर (4.वायल्पाडु), e) श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर (1.तिरुपति).

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

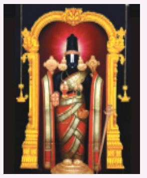

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
....
पिनकोड ....
मोबाइल नं ....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
(अ) चंदा की संख्या :
(आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
ई.एम.ओ. (EMO) :
दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

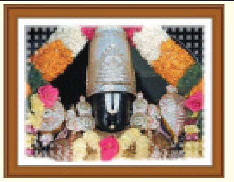

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877
दूरभाष : 2264359, 2264543.
संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर : 2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., P.G. Dip. in Epigraphy, Dip. in Yoga on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

महाकुंभमेला के अवसर पर दि. 18-02-2025 को वारणसि, बेनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में स्थित बिर्ला मंदिर में श्री श्रीनिवास कल्याणोत्सव अत्यंत वैभव से ति.ति.दे. के द्वारा आयोजित किया गया। इस संदर्भ में ति.ति.दे. के ई.ओ. ने भगवान जी को रेशमीवस्त्र समर्पित किया।

दि. 12-02-2025 को तिरुमल गिरि पर स्थित श्रीरामकृष्णतीर्थ मुक्कोटी के अवसर पर विशेष पूजा आराधना को ति.ति.दे. के द्वारा आयोजित किया गया। इस संदर्भ में अधिक संख्या में भक्तगण भाग लिया।

दि. 22-02-2025 को नंद्याला में स्थित श्री ब्रमरांबा सहित मल्लिकार्जुन स्वामी का ब्रह्मोत्सव के अवसर पर ति.ति.दे. के ई.ओ. ने पवित्र रेशमी वस्त्र को समर्पित किया।

श्रीकालहस्ति में स्थित श्री ज्ञानप्रसूनांबा सहित वायुलिंगेश्वर स्वामी का ब्रह्मोत्सव के अवसर पर दि. 28-02-2025 को ति.ति.दे. के ई.ओ. ने पवित्र रेशमी वस्त्र को समर्पित किया।

दि. 10-02-2025 को आं.प्र. हाईकोर्ट मुख्य न्यायाधीश जस्टिस श्री धीरज सिंह ठाकुर जी ने तिरुमल बालाजी को परिवार के साथ दर्शन किया। इस संदर्भ में पंडितगण वेदाशीर्वचन किया और ति.ति.दे. के अतिरिक्त ई.ओ. ने तीर्थ-प्रसाद व चित्रपठ को देते हुए दृश्य।

आं.प्र. धर्मस्व शाखा के सचिव श्री विनय चंद, आई.ए.एस., जी ने ति.ति.दे. न्यास-मंडली के पदेन सदस्य के रूप में दि. 23-02-2025 को तिरुमल श्री बालाजी मंदिर में शपथ ग्रहण किया।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
Printing on 25-03-2025 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under
RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 5th of every month.

वायल्पाडु, श्री पट्टाभिरामस्वामी का ब्रह्मोत्सव

दि.03-04-2025 से दि.11-04-2025 तक